

यहोवा के हाथ द्वारा निर्देशित

हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ

Jeff Pippenger

2012-10-16

हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ 95 में से 4

मेरे लिए प्रायः एक घंटे की प्रस्तुति में आठ पृष्ठों के नोट्स को पूरा कर पाना ही काफी कठिन होता है। और यदि आप ध्यान दें, तो हमारे पास 20 पृष्ठ हैं; इसलिए मैं केवल आपको यह बता रहा हूँ कि मेरा इन नोट्स को पढ़ने का कोई इरादा नहीं है। मेरा अभिप्राय यह है कि यहाँ से कुछ अंशों को मैं पढ़ूँगा, ताकि जो लोग LiveStream पर देख रहे हैं वे नोट्स डाउनलोड कर सकें; और जो अंततः इसे DVD पर देखेंगे, उनके लिए भी यह अभिलेख में उपलब्ध रहे, यदि ये लेख पहले से उनके पास उपलब्ध न हों। हम जिस विषय पर विचार कर रहे हैं, वह है Habakkuk की दो पट्टिकाएँ, और इस बिंदु पर हम केवल यह प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे हैं कि Ellen White, इस 1843 Chart पर प्रतिरूपित सत्यों के संबंध में, सहमति में थीं।

कल जिन पहली तीन प्रस्तुतियों का हमने समापन किया, वे यह प्रदर्शित कर रही थीं कि एलेन व्हाइट ने प्रारम्भिक लेखन, पृष्ठ 236 में 2520 की समय-भविष्यवाणी को स्पष्ट और विशेष रूप से मान्य ठहराया है।

मार्च 1844 की पहली निराशा के विषय में बोलते हुए, वह कहती हैं कि उस निराशा के बाद मिलरवादी बाइबल का अध्ययन करते रहे, और उन्होंने यह पाया कि वही प्रमाण जिसने उन्हें 2520, 2300, और 1335 के लिए 1843 की भविष्यवाणी करने के लिए प्रेरित किया था, उसी प्रमाण को तब 1844 में पहचाना गया, ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि ये भविष्यवाणीगत समय-अवधियाँ 1844 में समाप्त हुईं। और हमने विचार किया कि वे केवल इन्हीं दो भविष्यवाणीगत समय-अवधियों की बात कर सकती थीं [1843 चार्ट पर 2520 और 2300 की ओर संकेत करते हुए], 1335 की नहीं। 1335 ईस्वी काल में आरम्भ हुआ था; वह 1843 में समाप्त हुआ। अतः, वह 2520 और 2300-वर्षीय भविष्यवाणी की समझ पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर रही हैं।

और फिर उसने आगे यह कहा कि उस समयावधि के दौरान, जब उन्होंने यह सिद्ध करना आरम्भ किया कि तीन समय-संबंधी भविष्यवाणियाँ 1844 में समाप्त हुईं, तो इसी कारण वह उत्पीड़न उत्पन्न हुआ जिसने मिलेराइटों को कलीसिया से बाहर कर दिया। इसलिए यह कोई संयोग नहीं है कि यहाँ संसार के अंत में पुरुषों और स्त्रियों को एडवेंटिस्ट कलीसिया में इस कारण सताया जा रहा है कि वे यह जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं कि 2520 का अंत 1844 में हुआ।

यहोवा के हाथ द्वारा निर्देशित

तो, अब हम एक अन्य विषय की ओर बढ़ रहे हैं, यह जो यहीं है [1843 चार्ट पर AD508 की ओर संकेत करते हुए]। यदि आपने इन चार्टों को नहीं देखा है, तो आप पाएँगे कि सिस्टर व्हाइट ने इस 1843 चार्ट के विषय में कहा, "मैंने देखा कि प्रभु ने इस चार्ट में मार्गदर्शन किया," और वह इस 1850 चार्ट के विषय में कहती हैं कि इस चार्ट के प्रकाशन में परमेश्वर सम्मिलित था। अतः, उन्होंने हमें बता दिया है कि इन दोनों चार्टों के निर्माण में परमेश्वर सम्मिलित था, और इनकी संरचना मानवीय दृष्टि से उद्देश्यपूर्ण थी। मिलरियों ने यह जान-बूझकर किया, परन्तु यह परमेश्वर की योजना के अनुसार था।

यहाँ ऊपर, 677 ईसा-पूर्व से लेकर उस समय तक जिसे वे ए.डी. 1843 मानते थे, यह वही स्तम्भ है [1843 चार्ट में बाईं ओर से दूसरे स्तम्भ की ओर संकेत करते हुए] जो 2520 को परिभाषित करता है, जिसका आरम्भ 677 ईसा-पूर्व में होता है और जिसके विषय में वे मानते थे कि उसका अन्त ए.डी. 1843 में हुआ।

और उन्होंने इस सजीव चित्रण को 1850 के चार्ट पर बनाए रखा—यहाँ [बाएँ से तीसरे स्तंभ की ओर संकेत करते हुए] 677 ईसा-पूर्व से यहाँ, सन् 1844 तक। यह 2520 का वह स्तंभ है जो दोनों चार्टों पर विद्यमान है।

और इन स्तंभों के ठीक मध्य में, दोनों ही प्रसंगों में, क्रूस है।

और क्रूस के ठीक नीचे “डेली” का संदर्भ है। और “डेली” का प्रतीक—मूर्तिपूजकता, अर्थात् मूर्तिपूजक धर्म की जड़—आत्मोन्नति है; और यहीं आप इसमें प्रभु के हाथ को देख सकते हैं, आवश्यक नहीं कि इन दोनों चार्टों पर मानवीय हाथ को।

आपके और मेरे लिए, अथवा किसी भी व्यक्ति के लिए, हमसे आत्म-उन्नति को दूर किए जाने हेतु, हमें क्रूस के चरणों में आना होगा, जैसा कि इन दोनों चार्टों में प्रतिबिंबित किया गया है। उस शिक्षा को चित्रित किया गया है।

और, निःसंदेह, जब हम 2520 के स्तंभों की चर्चा करते हैं जिनके मध्य में क्रूस है, तो हम जानते हैं कि दानिय्येल 9 की पूर्ति में, जब मसीह बहुतों के साथ एक सप्ताह के लिए वाचा को दृढ़ करने आए, तब वह एक सप्ताह 2520 दिनों के तुल्य है, और उस सप्ताह के मध्य में उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया। इसलिए, इन प्रत्येक चार्टों पर इन स्तंभों के मध्य में हम क्रूस को देखते हैं, और यह उन 2520 दिनों की ओर संकेत करता है जिनमें मसीह ने बहुतों के साथ वाचा को दृढ़ किया।

अतः अब हम “डेली” और उसके प्रति एलेन व्हाइट के अनुमोदन पर विचार करेंगे।

23 सितंबर को, प्रभु ने मुझे दिखाया कि उसने अपने लोगों के बचे हुए जन को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया है, और यह कि इस एकत्र करने के समय में प्रयासों को दुगुना किया जाना चाहिए। तितर-बितर किए जाने के समय में, इस्राएल पर आघात किया गया और उसे फाड़ डाला गया; परन्तु अब, इस एकत्र करने के समय में, परमेश्वर अपने लोगों को चंगा करेगा और उनके घाव बाँधेगा। तितर-बितर किए जाने के समय में, सत्य का प्रचार करने के लिए किए गए प्रयासों का बहुत ही थोड़ा प्रभाव हुआ, बहुत थोड़ा, या कुछ भी नहीं, सिद्ध हुआ; परन्तु इस एकत्र करने के समय में, जब परमेश्वर ने अपने लोगों को एकत्र करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया है, सत्य का प्रचार करने के प्रयास अपने अभिप्रेत परिणाम उत्पन्न करेंगे। सबको कार्य में एकचित्त और उत्साही होना चाहिए। मैंने देखा कि अब इस एकत्र करने के समय में हमारे संचालन के लिए तितर-बितर किए जाने के समय से उदाहरण लेना किसी के लिए भी गलत है; क्योंकि यदि परमेश्वर अब हमारे लिए उससे अधिक कुछ न करे जितना उसने तब किया था, तो इस्राएल कभी भी एकत्र न किया जाता। मैंने देखा कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ के द्वारा निर्देशित था, और यह कि उसमें परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए; कि अंक वैसे ही थे जैसे वह उन्हें चाहता था; कि उसका हाथ उन अंकों में से कुछ की एक त्रुटि पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि कोई उसे देख न सके, जब तक कि उसका हाथ हटा न लिया गया।

“तब मैंने ‘नित्य’ (दानिय्येल 8:12) के संबंध में देखा कि ‘बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है, और प्रभु ने उसका सही दृष्टिकोण उन्हें दिया जिन्होंने न्याय-घंटे की पुकार दी। 1844 से पहले, जब एकता विद्यमान थी, लगभग सभी ‘नित्य’ के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद की उलझन में, अन्य दृष्टिकोण अपना लिए गए, और उसके परिणामस्वरूप अन्धकार और भ्रम हुए। 1844 के बाद से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और वह फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।”

“प्रभु ने मुझे दिखाया है कि तीसरे स्वर्गदूत का संदेश अवश्य आगे बढ़ना चाहिए, और प्रभु की तितर-बितर सन्तानों के बीच घोषित किया जाना चाहिए, परन्तु उसे समय पर आधारित नहीं किया जाना चाहिए। मैंने देखा कि कुछ लोग समय का प्रचार करने से उत्पन्न होने वाले झूठे उत्तेजना-भाव में पड़ रहे थे; परन्तु तीसरे स्वर्गदूत का संदेश समय की अपेक्षा अधिक सामर्थी है। मैंने देखा कि यह संदेश अपनी ही नींव पर स्थिर रह सकता है और इसे दृढ़ करने के लिए समय की आवश्यकता नहीं है; और यह महान सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ेगा, और अपना कार्य करेगा, और धर्म में शीघ्र पूरा किया जाएगा।”

“तब मुझे कुछ ऐसे लोगों की ओर ध्यान दिलाया गया जो इस बड़ी भूल में हैं कि यह विश्वास करते हैं कि पुरानी यरूशलेम जाना उनका कर्तव्य है, और यह समझते हैं कि प्रभु के आने से पहले वहाँ उनका कोई कार्य करना है। ऐसा दृष्टिकोण तीसरे स्वर्गदूत के सन्देश के अधीन प्रभु के वर्तमान कार्य से मन और रुचि को हटाने वाला है; क्योंकि जो यह सोचते हैं कि उन्हें अभी यरूशलेम जाना है, उनका मन वहीं लगा रहेगा, और अपने तथा दूसरों को वहाँ पहुँचाने के लिए वे अपने साधनों को वर्तमान सत्य के कार्य से रोक रखेंगे। मैंने देखा कि ऐसा मिशन कोई वास्तविक भलाई सिद्ध न करेगा; कि बहुत थोड़े से यहूदियों को मसीह के प्रथम आगमन पर भी विश्वास दिलाने में बहुत लंबा समय लग जाएगा, और उससे कहीं अधिक उनके दूसरे आगमन पर विश्वास दिलाने में। मैंने देखा कि शैतान ने इस विषय में कुछ लोगों को बहुत धोखा दिया है, और उनके चारों ओर इसी देश में आत्माएँ थीं जिनकी वे सहायता कर सकते थे और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए ले जा सकते थे, परन्तु वे उन्हें नाश होने के लिए छोड़ रहे थे। मैंने यह भी देखा कि पुरानी यरूशलेम कभी फिर से बसाई न जाएगी; और यह कि शैतान प्रभु की सन्तानों के मन को अब, इस इकट्ठा किए जाने के समय में, इन बातों की ओर लगाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रहा था, ताकि वे प्रभु के वर्तमान कार्य में अपनी समस्त रुचि न लगा दें, और प्रभु के दिन के लिए आवश्यक तैयारी की उपेक्षा करें।” Early Writings, 74-76.

कुछ बातों को हम प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारे पास Early Writings, पृष्ठ 74 से एक अंश है। हम पहले भी इस पर विचार कर चुके हैं। इस प्रस्तुति में जिन अनेक बातों पर हम विचार करेंगे, उन पर हम पहले भी विचार कर चुके हैं; परन्तु हममें से अधिकांश यह नहीं समझते कि Early Writings का यह अंश एक विकास-क्रम से होकर गुज़रा। जैसा कि वह Early Writings पुस्तक में विद्यमान है, लोग Early Writings में लिखी बातों का उपयोग सत्य को विकृत रूप में प्रस्तुत करने के लिए करेंगे। परन्तु यदि आप मूल स्रोत-दस्तावेज़ों तक लौट जाएँ, तो सत्य को विकृत रूप में प्रस्तुत करने के उनके तर्क का आधार समाप्त हो जाता है।

अतः, इस विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। मैं केवल कुछ बिंदुओं की पहचान करने जा रहा हूँ, क्योंकि यहाँ हम “डेली” के विषय से व्यवहार कर रहे हैं। परन्तु, Early Writings के इस अनुच्छेद में, मैं चाहता हूँ कि आप आरंभिक दो विचारों पर ध्यान दें—23 सितंबर।

ठीक है। 23 सितंबर—यदि आप इससे परिचित नहीं हैं, तो वहाँ 1850 लिख सकते हैं; 23 सितंबर, 1850। इसका प्रभाव “डेली” की सही समझ पर पड़ता है।

पहले अनुच्छेद का अंत एक ऐसा कथन है, जिस पर हम यहाँ पिछले कुछ दिनों से पहले ही विचार कर चुके हैं: “मैंने देखा है कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित था, और यह कि उसमें परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए; कि अंक वैसे ही थे जैसे वह उन्हें चाहता था; कि उसका हाथ उन अंकों में से कुछ की एक त्रुटि पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि कोई उसे देख न सके, जब तक कि उसका हाथ हटा न लिया गया।”

दूसरा अनुच्छेद कहता है, “तब मैंने ‘नित्य’ के संबंध में देखा (दानियेल 8:12)” अब, मैं चाहता हूँ कि आप इसे अपनी स्मृति में रख लें—इस पर हम निःसंदेह बाद में विचार करेंगे, यदि प्रभु की इच्छा हुई—जब 1843 के चार्ट पर नित्य को प्रस्तुत किया गया है, यहीं, तो वहाँ लिखा है, “नित्य को हटा दिया जाना”; वहाँ लिखा है, “दानियेल 12:11 और 12।” 1850 के चार्ट पर, जब वह नित्य के विषय में चर्चा करता है, तो वहाँ लिखा है, “पैगन प्रभुत्व, अथवा जब नित्य हटा दिया गया, दानियेल 11:31।” अतः, इन दोनों चार्टों पर, जो बल वे दानियेल 11:31 और दानियेल 12:11 से चिन्हित कर रहे हैं, वह नित्य को हटा दिए जाने पर है। ठीक है?

और Daniel 11:31 तथा Daniel 12:11 में जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद “हटा लेना” किया गया है, वह sur है, और उसका अर्थ है “हटा लेना”; उसका अर्थ है “दूर कर देना।”

परन्तु, दानियेल 8 में, पद 11 में, जहाँ यह कहा गया है कि नित्य उठा लिया जाता है, वहाँ एक भिन्न इब्रानी शब्द प्रयुक्त हुआ है। वह है rum, और उसका अर्थ है “ऊपर उठाना और ऊँचा करना।”

अतः, विलियम मिलर ने क्रूडेन की कॉनकॉर्डन्स का उपयोग किया, और क्रूडेन की कॉनकॉर्डन्स आपको इब्रानी या यूनानी के विषय में कोई अंतर्दृष्टि नहीं देती। इसलिए, प्रभु मिलेरियों का मार्गदर्शन कर रहा था; क्योंकि, दानिय्येल की पुस्तक में जिन तीन स्थानों पर “डेली” का उल्लेख है—दानिय्येल अध्याय 8, दानिय्येल अध्याय 11, और दानिय्येल अध्याय 12—उनमें अध्याय 11 और 12 में जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद “हटा दिया जाएगा” किया गया है, उसका अर्थ “हटा दिया जाएगा” ही है। और इन्हीं चार्टों में वे इसी बात पर बल दे रहे हैं कि जब मूर्तिपूजकता हटा दी गई, तब 1290 और 1335 की भविष्यवाणियाँ प्रारम्भ होंगी।

परन्तु, दानिय्येल 8 में, जब “नित्य” हटा लिया जाता है, तो वहाँ उसके हटाए जाने की बात नहीं हो रही है; वहाँ मूर्तिपूजक धर्म के ऊपर उठाए जाने और महिमामण्डित किए जाने की बात हो रही है। अतः, मिलेराइट्स सही थे। उन्होंने दानिय्येल की उन दो अध्यायों का उल्लेख किया जो “नित्य” के हटाए जाने के विषय में हैं।

परन्तु यहाँ अर्ली राइटिंग्स में, और जब हम मूल स्रोत-दस्तावेजों की ओर लौटते हैं, तो आप इस अध्याय में देखने वाले हैं कि मूल रूप से दानिय्येल 8:12 का यह संदर्भ वहाँ नहीं है। मैं नहीं जानता कि 1882 में जब उन्होंने अर्ली राइटिंग्स मुद्रित की, तब एलेन व्हाइट ने उन्हें इसे उसमें सम्मिलित करने के लिए कहा था, या किसी संपादक ने उसे जोड़ दिया था। मैं इससे विचलित नहीं हूँ, क्योंकि यहाँ यह ‘हटा लिए जाने’ की बात नहीं कर रहा है।

दूसरे अनुच्छेद में यह कहा गया है, “तब मैंने ‘नित्य’ (दानिय्येल 8:12) के संबंध में देखा कि ‘बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है, तथा प्रभु ने उसका सही दृष्टिकोण उन्हें दिया जिन्होंने न्याय के समय का उद्घोष किया।”

अब, कई वर्ष पहले जर्मनी में हमारी जर्मनी के कुछ प्रमुख पास्टरों और जर्मनी के कुछ सेमिनरी अध्यापकों के साथ एक सभा हुई थी, जहाँ मैंने प्रस्तुत किया, और उन्होंने इस संदेश पर अपने पत्थर फेंके।

और वहाँ इटली से एक पास्टर था, और उसने इस पद के विषय में एक मूर्खतापूर्ण तर्क प्रस्तुत किया। और उसने जो कहा वह यह था—और “नित्य” के विषय में ऐसे कई मूर्खतापूर्ण तर्क हैं, इसलिए आप पाएँगे कि यह मूर्खतापूर्ण तर्क बार-बार प्रयुक्त होता है, और हम इसे यहाँ अभिलेख में रखेंगे। यह कहता है, “तब मैंने ‘नित्य’ (दानिय्येल 8:12) के संबंध में देखा कि ‘बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और मूल पाठ का भाग नहीं है, और यह कि प्रभु ने इसका सही दृष्टिकोण उन लोगों को दिया जिन्होंने न्याय-घंटा का घोष किया।” यहाँ वह मूर्खतापूर्ण तर्क है: वे कहते हैं कि एलेन व्हाइट यहाँ “नित्य” का अनुमोदन नहीं कर रही हैं; वह अग्रदूतों की उस समझ का अनुमोदन कर रही हैं कि ‘बलिदान’ शब्द मानवीय बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था और मूल पाठ का भाग नहीं है। ठीक है? तो, यह इटली का पास्टर यही तर्क प्रस्तुत कर रहा है।

और मैंने कहा, “तो फिर, अगला वाक्य मुझे समझाइए, पास्टर।”

अगला वाक्य कहता है, “जब एकता विद्यमान थी, 1844 से पहले, लगभग सभी ‘नित्य’ के विषय में सही समझ पर एकमत थे; . . .।” यह उस सही दृष्टिकोण के बारे में नहीं है जिसमें human wisdom द्वारा sacrifice शब्द जोड़ा गया हो। एलेन व्हाइट यहाँ—और यह एक कठिन बात है, यह उन लोगों के लिए अत्यन्त कठिन बात है जो आज एडवेंटिज़्म में सुनने से इन्कार करते हैं और देखने से इन्कार करते हैं। यह अनुच्छेद—संभवतः भविष्यवाणी की आत्मा के किसी भी अन्य अनुच्छेद से अधिक धर्मशास्त्रियों ने इसी अनुच्छेद के कारण अपना उद्धार खोया है। मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रहा; मुझे लगता है, यह सम्भवतः सही है।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में, जब “डेली” के विषय में झूठा दृष्टिकोण एडवेंटिज़्म में प्रविष्ट कराया जा रहा था, तब इस विषय के दोनों पक्षों में जो कोई भी इसके विषय में संघर्ष कर रहा था, वह जानता था कि उनका संघर्ष इसी अनुच्छेद को लेकर है। जब स्टीफन हास्केल पायनियरों के उस दृष्टिकोण की रक्षा में आए कि “डेली” मूर्तिपूजकता थी, तब उन्होंने क्या किया? उन्होंने इस 1843 चार्ट को पुनर्मुद्रित किया, और इस अनुच्छेद को नीचे रख दिया। अतः यही अनुच्छेद विवाद का केंद्र है, और यहीं वह स्थान है जहाँ बहुत, बहुत से पुरुष अपनी ही तलवारों पर गिरकर मर

गए हैं।

इसलिए, कम-से-कम उस स्तर पर जिसे मैं यहाँ चाहता हूँ कि आप देखें, क्योंकि हाल के समय में White Horse Ministries के Steve Wohlberg जैसे लोग इस संदेश का विरोध करते रहे हैं। और उसके तर्कों में से एक यह है, “अच्छा, Ellen White का Daily के विषय में कभी कोई मत नहीं था, इसलिए मेरा भी कोई मत होना आवश्यक नहीं है,” और यह नितांत मूर्खतापूर्ण स्थिति थी। परंतु, यदि हम उसे यह संभावना भी दे दें कि Ellen White का वास्तव में इस विषय में कोई मत नहीं था, तो वह इस उद्धरण में क्या कहती हैं? वह कहती हैं कि Pioneers की इसके विषय में सही समझ थी। यदि वह स्वयं यह नहीं जानती थीं कि वह क्या था, तब भी यहाँ वह यह कह रही हैं कि इसके विषय में एक सही दृष्टिकोण है, जिसका अर्थ यह है कि एक गलत दृष्टिकोण भी है, संभवतः कई गलत दृष्टिकोण।

आपके पास वांस फेरल जैसे लोग हैं। वांस फेरल; लोगों को वांस फेरल की भविष्यवाणी-संबंधी व्याख्याओं पर विश्वास है, और मुझे नहीं पता क्यों। वांस फेरल अकेले नहीं हैं, परंतु वे उन व्यक्तियों में से एक हैं जो कहते हैं कि “डेली” मूर्तिपूजा और मसीह की पवित्रस्थान-सेवा, दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। ठीक है? वह यह कह रहा है कि यह प्रतीक शैतान और मसीह, दोनों का प्रतिनिधित्व करता है।

उस प्रकार के तर्क के साथ किस प्रकार की विवेक-बुद्धि का प्रयोग किया जा रहा है?

ठीक है, सिस्टर व्हाइट, यहाँ “डेली” जो कुछ भी निरूपित करती हो, वह कहती हैं कि उसका एक सही दृष्टिकोण है। अतः कम-से-कम हम यहाँ इस आधार-वाक्य से तो सहमत हो सकते हैं, है न?

“तब मैंने —नित्य’ (दानियेल 8:12) के संबंध में देखा कि —बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि से जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है, और यह कि प्रभु ने उसकी सही समझ उन्हें दी जिन्होंने न्याय की घड़ी का पुकारा हुआ संदेश दिया। जब 1844 से पहले एकता विद्यमान थी, तब लगभग सब लोग —नित्य’ के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद से उत्पन्न भ्रम में, अन्य मतों को ग्रहण कर लिया गया है,”

मैंने इतालवी पास्टर से यही कहा। मैंने कहा, “ठीक है। क्या आप मुझे कोई ऐसे ऐतिहासिक संदर्भ दे सकते हैं जहाँ 1844 के बाद ‘sacrifice’ शब्द के विषय में अन्य दृष्टिकोण अपनाए गए हों?”

और इस समय वह किसी प्रकार उससे पीछे हट गया।

1844 से “निरन्तर” के विषय में अन्य मत अपनाए गए हैं, और उन्होंने क्या उत्पन्न किया है? अंधकार और भ्रम।

“अंधकार और भ्रम” को रेखांकित कीजिए, क्योंकि जब सिस्टर व्हाइट आगे चलकर ‘डेली’ के विषय में और अधिक कहती हैं, तो वह अंधकार और भ्रम की चर्चा करती हैं, और आज प्रातः हम आपको उनमें से कुछ दिखाने जा रहे हैं।

‘डेली’ के विषय में गलत दृष्टिकोण अपनाओ, और वह अंधकार तथा भ्रम उत्पन्न करता है।

“1844 से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और वह फिर कभी परीक्षा न होगा।”

अतः, यहाँ आप जिस “दैनिक” के संबंध को देखते हैं, उसके विषय में यह तर्क है। आज का तर्क यही है; यही वह तर्क है जिसे एलेन व्हाइट के पुत्र ने प्रस्तुत किया था। इसे अन्य लोगों ने भी प्रस्तुत किया था, परन्तु उसी ने इसे एडवेंटवाद के ऐतिहासिक अभिलेख में स्थापित किया। तर्क यह है कि जब आप इस अनुच्छेद को पढ़ते हैं, तब आपको समय-निर्धारण के संदर्भ को समझना आवश्यक है।

—“अन्य मतों को ग्रहण किया गया है,—‘नित्य’ के संबंध में—“और उसके परिणामस्वरूप अंधकार और भ्रम उत्पन्न हुए हैं। 1844 से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और वह फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।”

“प्रभु ने मुझे दिखाया है कि तीसरे स्वर्गदूत का संदेश अवश्य आगे बढ़े और प्रभु की तितर-बितर संतान के बीच घोषित किया जाए, परन्तु उसे समय पर आधारित नहीं ठहराया जाना चाहिए।”

क्या आप समझते हैं कि विली व्हाइट यह क्यों कह रहे हैं कि हमें समय-निर्धारण के संदर्भ को देखना आवश्यक है?

यह उस भ्रम के विषय में बताता है जो “Daily” के संबंध में गलत दृष्टिकोणों ने उत्पन्न किया; समय कोई परीक्षा नहीं रहा है; और फिर समय-निर्धारण के विषय में एक अनुच्छेद है।

ठीक है, आपको यह समझना है: समय-निर्धारण के विषय में यह अनुच्छेद मूल स्रोत-दस्तावेज़ में नहीं था; और, समय के विषय में यह कथन कि वह कोई परीक्षा नहीं रहा है, उस वाक्य को परिवर्तित कर दिया गया है। यह एलेन व्हाइट के मूल विचार का गलत निरूपण करता है। उन्होंने समय-निर्धारण के विषय में किसी भी बात को नित्य के साथ नहीं जोड़ा। आज प्रातः हम इसी पर विचार करना चाहते हैं।

अतः, जैसा कि मैंने कहा, हम इन सभी पृष्ठों को पढ़ने नहीं जा रहे हैं। मैं केवल यह सुनिश्चित करने जा रहा हूँ कि वे आपके पास हों, ताकि आप जो मैं कह रहा हूँ उसकी जाँच कर सकें; क्योंकि, एक मनुष्य होने के नाते, यह संभावना है कि मैं आपको भ्रमित कर रहा हूँ।

आर्थर व्हाइट—“समय-निर्धारण का संदर्भ”

पुराने मत के समर्थकों ने यह प्रतिपादित किया कि इस कथन [Early Writings, 74-75.] के शब्द-विन्यास ने “डेली” के विषय में उस मत पर स्वर्ग की स्वीकृति की मुहर लगा दी थी, जिसे मिलर ने माना था और जिसे अंततः उरियाह स्मिथ ने पुनः दोहराया।

विली व्हाइट के पुत्र आर्थर व्हाइट, एलेन व्हाइट के इतिहास पर अपने छह-खंडीय संकलन में, अपने पिता की “डेली” के सही दृष्टिकोण को अस्वीकार करने वाली स्थिति के विषय में बोलते हुए, EGW, खंड 6, पृष्ठ 252 पर कहते हैं,

“पुराने दृष्टिकोण के समर्थकों”—अर्थात् यह कि “नित्य” मूर्तिपूजा का प्रतिनिधित्व करता था—“ने यह बनाए रखा कि इस कथन [Early Writings, 74-75.] की शब्दावली ने ‘नित्य’ के उस दृष्टिकोण पर स्वर्ग की स्वीकृति की मुहर लगाई, जिसे मिलर ने माना था और जिसे अंततः उरियाह स्मिथ ने दोहराया।”

यदि आर्थर व्हाइट एक वास्तविक, सटीक इतिहासकार होते, तो क्या आप जानते हैं कि उन्हें वहाँ क्या कहना चाहिए था? उन्हें वहाँ केवल एक शब्द रख देना चाहिए था; परन्तु, आर्थर व्हाइट यहाँ चूक गए। उन्हें कहना चाहिए था, “पुराने दृष्टिकोण के समर्थकों ने [सही रूप से] यह माना कि इस कथन का शब्द-विन्यास, —यह माना कि इस कथन का शब्द-विन्यास [Early Writings, 74-75.]— मिलर द्वारा माने गए और अंततः उरियाह स्मिथ द्वारा पुनः दोहराए गए ‘डेली’ संबंधी दृष्टिकोण पर स्वर्ग की स्वीकृति की मुहर लगाता था।”

परन्तु वह इसे वहाँ सही रूप में प्रस्तुत नहीं करता। वह केवल वही कह रहा है जिसका वे प्रतिपादन करते हैं, मानो यह संभावना हो कि वे किसी गलत मत पर बने हुए थे। परन्तु ऐसा नहीं था; उनका मत सही था।

—“नई-दृष्टिकोण के समर्थक”—उसके पिता, विली, ए. जी. डेनियल्स, डब्ल्यू. डब्ल्यू. प्रेस्कॉट, और मैं अभी वहाँ नहीं जाऊँगा—“यह मानते थे कि उस कथन को उसके प्रसंग में समझा जाना चाहिए—समय-निर्धारण के प्रसंग में।”

हमने अभी आपको उनका तर्क Early Writings, पृष्ठ 74 में बताया।

—“नव-दृष्टिकोण के समर्थकों का मत था कि उस कथन को उसके प्रसंग में—अर्थात् समय-निर्धारण के प्रसंग में—लिया जाना चाहिए। एलेन व्हाइट के बार-बार दिए गए ये कथन कि ‘इस बिंदु पर मेरे पास कोई ज्योति नहीं है’ (Letter 226, 1908) और ‘जिन बिंदुओं पर प्रश्न उठाए गए हैं, उन्हें मैं स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में असमर्थ हूँ’ (Letter 250, 1908), तथा जब यह प्रश्न उन पर बलपूर्वक रखा गया तो उनकी एक निश्चित घोषणा करने में

असमर्थता, उनके निष्कर्ष को समर्थन देती हुई प्रतीत होती थी। उन्हें यह भी पूर्ण विश्वास था कि एलेन व्हाइट के माध्यम से दिए गए संदेश इतिहास की स्पष्ट रूप से स्थापित घटनाओं के साथ विरोध में नहीं होंगे।” Arthur White, EGW, volume 6, 252.

मूल संस्करण—रिव्यू एंड हेराल्ड, 1 नवम्बर, 1850

और *Early Writings*, पृष्ठ 74—यह कब मुद्रित हुआ था? 1882; पुस्तक *Early Writings* 1882 में मुद्रित हुई थी।

परंतु जिस अंश पर हम विचार कर रहे हैं, वह मूलतः Review and Herald, 1 नवंबर, 1850 में पाया जाता है, और वह आपके नोट्स में है। और वह कई अनुच्छेदों में है, और जैसा कि मैंने कहा है, हम उन सबको पढ़ने नहीं जा रहे हैं।

हम पृष्ठ 2 पर चार अनुच्छेद देखते हैं, फिर पृष्ठ 3 पर चार अनुच्छेद:

“प्रिय भाइयों और बहनों, मैं आपको उस बात का एक संक्षिप्त विवरण देना चाहती हूँ जो प्रभु ने हाल ही में मुझे दर्शन में दिखाई है। मुझे यीशु की मनोहरता, और स्वर्गदूतों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम, दिखाया गया। स्वर्गदूत ने कहा—क्या तुम उनका प्रेम नहीं देख सकते?—उसका अनुसरण करो। ठीक इसी प्रकार परमेश्वर की प्रजा को भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। अपने दोष का भार भाई पर रखने की अपेक्षा स्वयं पर पड़ने दो। मैंने देखा कि यह संदेश—‘जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेचकर दान दो’—कुछ लोगों द्वारा उसके स्पष्ट प्रकाश में नहीं दिया गया था; कि हमारे उद्धारकर्ता के इन वचनों का वास्तविक अभिप्राय स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया था। मैंने देखा कि बेचने का उद्देश्य यह नहीं था कि उन लोगों को दिया जाए जो श्रम करने और अपना भरण-पोषण करने में समर्थ हैं; वरन् सत्य का प्रचार करना था। जो लोग श्रम करने में समर्थ हैं, उन्हें आलस्य में पोषित और प्रोत्साहित करना पाप है। कुछ लोग सब सभाओं में उपस्थित होने के लिए बड़े उत्साही रहे हैं; परमेश्वर की महिमा के लिए नहीं, परन्तु ‘रोटियों और मछलियों’ के लिए। ऐसे लोगों के लिए इससे कहीं अच्छा होता कि वे घर पर रहकर अपने हाथों से—‘जो अच्छा है वही’—परिश्रम करते, ताकि अपने परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्ति करें, और बहुमूल्य वर्तमान सत्य के कार्य को बनाए रखने के लिए कुछ देने योग्य भी हों।”

मैंने देखा कि कुछ लोगों ने अविश्वासियों के सामने बीमारों के चंगे होने के लिए प्रार्थना करने में भूल की थी। यदि हम में से कोई बीमार हो, और याकूब 5:14, 15 के अनुसार कलीसिया के प्राचीनों को बुलाकर अपने ऊपर प्रार्थना करवाए, तो हमें यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। उसने अविश्वासियों को कमरे से बाहर कर दिया, फिर बीमार को चंगा किया; अतः जब हम अपने बीच के बीमारों के लिए प्रार्थना करें, तब हमें उन लोगों के अविश्वास से अलग रहने का प्रयत्न करना चाहिए जिनके पास विश्वास नहीं है।

“फिर मेरा ध्यान उस समय की ओर फेर दिया गया जब यीशु अपने चेलों को अकेले एक ऊपर के कक्ष में ले गया, और पहले उनके पाँव धोए, और उसके बाद उन्हें टूटी हुई रोटी खाने को दी, जो उसके टूटे हुए शरीर का प्रतीक थी, और दाखलता का रस, जो उसके बहाए गए लहू का प्रतीक था। मैंने देखा कि इन बातों में सबको समझ-बूझ के साथ चलना चाहिए, और यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, और जब इन विधियों का पालन करें, तो जहाँ तक संभव हो अविश्वासियों से पृथक रहना चाहिए।”

तब मुझे दिखाया गया कि यीशु के पवित्रस्थान से निकल जाने के बाद सात अंतिम विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी। स्वर्गदूत ने कहा—परमेश्वर और मेम्ने का क्रोध ही दुष्टों के विनाश या मृत्यु का कारण होता है। परमेश्वर की वाणी पर पवित्रजन ध्वजाओं से सुसज्जित सेना के समान पराक्रमी और भयावह होंगे; परन्तु तब वे लिखे हुए न्याय को कार्यान्वित नहीं करेंगे। उस न्याय का कार्यान्वयन 1000 वर्षों के अंत में होगा।

“पवित्रजन जब अमरत्व में परिवर्तित कर दिए जाते हैं, और एक साथ ऊपर उठा लिए जाते हैं, और अपनी वीणाएँ, मुकुट आदि प्राप्त करते हैं, और पवित्र नगर में प्रवेश करते हैं, तब यीशु और पवित्रजन न्याय करने के

लिए बैठते हैं। पुस्तकें खोली जाती हैं—जीवन की पुस्तक और मृत्यु की पुस्तक; जीवन की पुस्तक में पवित्रजनों के सत्कर्म लिखे हैं, और मृत्यु की पुस्तक में दुष्टों के कुकर्म लिखे हैं। इन पुस्तकों की तुलना विधि-पुस्तक, अर्थात् बाइबल, से की गई, और उसी के अनुसार उनका न्याय किया गया। पवित्रजन, यीशु के साथ एकमत होकर, दुष्ट मरे हुआं पर अपना न्याय सुनाते हैं। देखो! स्वर्गदूत ने कहा, पवित्रजन, यीशु के साथ एकमत होकर, न्यायासन पर बैठते हैं, और दुष्टों में से प्रत्येक को, शरीर में किए गए कर्मों के अनुसार, उसका दण्ड निर्धारित करते हैं, और उनके नामों के सामने यह अंकित कर दिया जाता है कि न्याय के कार्यान्वयन के समय उन्हें क्या प्राप्त होना है। मैंने देखा कि यह कार्य पवित्र नगर में, उसके पृथ्वी पर उतरने से पहले, उन 1000 वर्षों के दौरान, यीशु के साथ पवित्रजनों का कार्य था। फिर 1000 वर्षों के अंत में, यीशु, और स्वर्गदूत, और उसके साथ सभी पवित्रजन, पवित्र नगर को छोड़ते हैं; और जब वह उनके साथ पृथ्वी पर उतर रहा होता है, तब दुष्ट मरे हुए जिलाए जाते हैं, और तब वे ही लोग जिन्होंने 'उसे बेधा था,' जब जिलाए जाएँगे, तो उसे उसकी सारी महिमा में, उसके साथ स्वर्गदूतों और पवित्रजनों सहित, दूर से देखेंगे, और उसके कारण विलाप करेंगे। वे उसके हाथों और उसके पैरों में कीलों के चिन्ह, और उस स्थान को देखेंगे जहाँ उन्होंने उसके पार्श्व में भाला भोंका था। कीलों और भाले के चिन्ह तब उसकी महिमा होंगे। 1000 वर्षों के अंत में ही यीशु जैतून के पर्वत पर खड़ा होता है, और वह पर्वत फटकर अलग हो जाता है, और एक विशाल मैदान बन जाता है, और जो उस समय भागते हैं वे दुष्ट हैं, जो अभी-अभी जिलाए गए हैं। तब पवित्र नगर नीचे उतरता है और उस मैदान पर ठहर जाता है।"

तब शैतान पुनर्जीवित किए गए दुष्टों को अपनी आत्मा से भर देता है। वह उन्हें यह कहकर फुसलाता है कि नगर में जो सेना है वह छोटी है, और उसकी सेना बड़ी है, और वे पवित्र जनों पर विजय पाकर नगर को ले सकते हैं। जब शैतान अपनी सेना को एकत्र कर रहा था, तब पवित्र जन नगर में थे, और परमेश्वर के स्वर्गलोक की शोभा और महिमा को निहार रहे थे। यीशु उनके अग्रभाग में थे और उनका नेतृत्व कर रहे थे। अचानक वह प्रिय उद्धारकर्ता हमारे बीच से अदृश्य हो गए; परन्तु शीघ्र ही हमने उनका मधुर स्वर सुना, जो कह रहा था,— 'हे मेरे पिता के धन्यो, उस राज्य के अधिकारी बनो, जो जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।' हम यीशु के चारों ओर एकत्र हो गए, और जैसे ही उन्होंने नगर के फाटक बन्द किए, दुष्टों पर शाप सुनाया गया। फाटक बन्द हो गए। तब पवित्र जनों ने अपने पंखों का उपयोग किया और नगर की शहरपनाह की चोटी पर जा पहुँचे। यीशु भी उनके साथ थे; उनका मुकुट दीप्तिमान और महिमामय प्रतीत होता था। वह मुकुट के भीतर मुकुट था, संख्या में सात। पवित्र जनों के मुकुट अत्यन्त शुद्ध सोने के थे, जो तारों से अलंकृत थे। उनके मुख महिमा से दमक रहे थे, क्योंकि वे यीशु की प्रत्यक्ष प्रतिमा में थे; और जब वे उठे और सब एक साथ नगर के शीर्ष की ओर बढ़े, तब उस दृश्य से मैं मुग्ध हो उठा।

तब दुष्टों ने देखा कि उन्होंने क्या खो दिया था; और परमेश्वर की ओर से उन पर आग फूँकी गई, और उसने उन्हें भस्म कर दिया। यही न्याय का दण्ड-विधान था। तब दुष्टों ने उसी के अनुसार दण्ड पाया, जैसा पवित्र जनों ने यीशु के साथ एकता में रहते हुए उन 1000 वर्षों के दौरान उनके लिये ठहराया था। परमेश्वर की वही आग, जिसने दुष्टों को भस्म कर दिया, सारी पृथ्वी को शुद्ध भी कर गई। टूटे-फूटे, विदीर्ण पहाड़ प्रचण्ड तपन से पिघल गए; वायुमण्डल भी, और सारा भूसा भस्म हो गया। तब हमारा उत्तराधिकार हमारे सामने प्रकट हुआ, महिमामय और सुन्दर, और हमने नई की गई सारी पृथ्वी का उत्तराधिकार पाया। हम सब ने ऊँचे स्वर से पुकारा, महिमा, हल्लेलूयाह।

मैंने यह भी देखा कि चरवाहों को, किसी भी ऐसे नये महत्त्वपूर्ण विषय का समर्थन करने से पहले, जिसके बारे में वे सोचते हैं कि बाइबल उसका समर्थन करती है, उन लोगों से परामर्श करना चाहिए जिन पर उन्हें विश्वास करने का उचित कारण है—वे लोग जो सब संदेशों में सम्मिलित रहे हैं और समस्त वर्तमान सत्य में दृढ़ हैं। तब चरवाहे पूर्णतः एकमत होंगे, और चरवाहों की यह एकता कलीसिया द्वारा अनुभव की जाएगी। मैंने देखा कि ऐसा मार्ग दुःखद विभाजनों को रोक देगा, और तब इस बहुमूल्य झुंड के विभाजित हो जाने, तथा भेड़ों के बिना चरवाहे के तितर-बितर हो जाने का कोई संकट न रहेगा।"—

और फिर यह पाँच और अनुच्छेदों के साथ समाप्त होता है, जिन्हें मैंने आपके लिए एक बॉक्स में रखा है, क्योंकि लेख के ये पाँच अनुच्छेद वही हैं जो अंततः *Early Writings* में सम्मिलित होने वाले हैं। यही कारण है कि इन अंतिम पाँच अनुच्छेदों के चारों ओर बॉक्स बनाया गया है।

“23 सितंबर को, प्रभु ने मुझे दिखाया कि उसने अपने लोगों के बचे हुए को छुड़ाने के लिये दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया है, और इस एकत्रीकरण के समय में प्रयासों को दुगुना किया जाना चाहिए। तितर-बितर किए जाने के समय में इस्राएल पर प्रहार किया गया और उसे फाड़ डाला गया; पर अब, एकत्र किए जाने के समय में, परमेश्वर अपने लोगों को चंगा करेगा और उनके घाव बाँधेगा। तितर-बितर होने के समय में सत्य को फैलाने के लिये किए गए प्रयासों का बहुत कम प्रभाव हुआ, वे बहुत थोड़ा या कुछ भी सिद्ध न कर सके; पर एकत्र किए जाने के समय में, जब परमेश्वर ने अपने लोगों को एकत्र करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया है, तब सत्य को फैलाने के प्रयास अपना अभिप्रेत प्रभाव उत्पन्न करेंगे। सबको इस कार्य में एकजुट और उत्साही होना चाहिए। मैंने देखा कि अब, इस एकत्रीकरण के समय में, हमारे संचालन के लिये उदाहरणों के रूप में तितर-बितर होने के समय का उल्लेख करना किसी के लिये लज्जा की बात है; क्योंकि यदि परमेश्वर अब हमारे लिये उससे अधिक न करे जितना उसने तब किया था, तो इस्राएल कभी एकत्र न किया जाता। यह उतना ही आवश्यक है कि सत्य को एक पत्र में प्रकाशित किया जाए, जितना कि उसका प्रचार किया जाए।”

“प्रभु ने मुझे दिखाया कि 1843 का चार्ट उसके हाथ के निर्देशन में था, और उसका कोई भी भाग परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए; कि उसमें दी हुई संख्याएँ वैसी ही थीं जैसी वह चाहता था। कि उसका हाथ कुछ संख्याओं की एक त्रुटि पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि जब तक उसका हाथ हटा न लिया गया, तब तक कोई उसे देख न सके।

“तब मैंने ‘नित्य’ के विषय में देखा कि ‘बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है; तथा यह कि प्रभु ने उसके विषय में सही समझ उन्हें दी जिन्होंने न्याय के समय का पुकार सुनाई। जब 1844 से पहले एकता विद्यमान थी, तब लगभग सभी ‘नित्य’ के विषय में सही समझ पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद, भ्रम की स्थिति में, अन्य मत अपना लिए गए, और उसके पीछे अन्धकार और भ्रम चला आया।”

“प्रभु ने मुझे दिखाया कि 1844 से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और समय फिर कभी परीक्षा नहीं होगा। ”

“तब मेरा ध्यान कुछ ऐसे लोगों की ओर दिलाया गया, जो इस बड़ी भ्रांति में हैं कि प्रभु के आने से पहले संतों को अभी पुरानी यरूशलेम जाना है, आदि। ऐसी धारणा मन और रुचि को तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के अधीन परमेश्वर के वर्तमान कार्य से हटाने के लिए उपयुक्त है; क्योंकि यदि हमें यरूशलेम जाना है, तो स्वाभाविक ही हमारे मन वहीं लगे रहेंगे, और हमारे साधन अन्य उपयोगों से रोक लिए जाएंगे, ताकि संतों को यरूशलेम पहुँचाया जा सके। मैंने देखा कि जिस कारण उन्हें इस बड़ी भ्रांति में पड़ जाने दिया गया, वह यह है कि उन्होंने उन त्रुटियों को, जिनमें वे पिछले अनेक वर्षों से पड़े रहे हैं, न तो स्वीकार किया है और न ही त्यागा है।” Review and Herald, November 1, 1850.

क्या तुम उन्हें देखते हो? क्या तुम जानते हो कि मैं किस विषय में बात कर रहा हूँ?

ठीक है। यदि हम इन अंतिम पाँच अनुच्छेदों में प्रवेश करें, तो आप कुछ ऐसी बातें देखेंगे जो मूल पाठ में उनसे भिन्न हैं जिन्हें आप अर्ली राइटिंग्स, पृष्ठ 74 में पाएँगे।

श्रोताओं में से: तो, आप यह कह रहे हैं कि इस डिब्बे में रखी हुई ये वस्तुएँ ही मूल हैं?

इस चौखटे के भीतर जो अंश है, वह इस मूल लेख के अंतिम पाँच अनुच्छेद हैं, और यह चौखटा उन्हीं के चारों ओर है। ये पाँच अनुच्छेद ही अंततः Early Writings, पृष्ठ 74 में सम्मिलित हुए।

परन्तु, यह कब मुद्रित हुआ था, यह कब लिखा गया था? नवंबर 1850।

अतः, मैंने उन बातों को गाढ़े अक्षरों में चिह्नित किया है जो इन पाँच अनुच्छेदों में परिवर्तित की जाने वाली हैं। इसमें एक रूपान्तरण होने जा रहा है; क्योंकि बहुत निकट भविष्य में, 1851 में, Ellen G. White की पुस्तक A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White मुद्रित होने वाली है, और वे इन अनुच्छेदों को लेकर उन्हें A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White में रखेंगे। और यहाँ से [Review and Herald, November 1850 में प्रकाशित लेख] A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White तक, इन पाँच अनुच्छेदों में कुछ छोटे संपादकीय परिवर्तन हुए। और फिर 1851 की A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White से 1882 की Early Writings तक, कुछ और संपादकीय परिवर्तन हुए, और वही संपादकीय परिवर्तन हैं जो Early Writings, page 74, को जटिल बनाते हैं।

अतः, मूल पांडुलिपि के समापन में आने वाले इन पाँच अनुच्छेदों में, पहले अनुच्छेद में, “23 सितंबर को, प्रभु ने मुझे दिखाया . . . ,” यह बदला जाएगा।

अगले अनुच्छेदों में: “तब मैंने देखा . . .”; “तब मैंने देखा . . .”; “प्रभु ने मुझे दिखाया . . .”; और, “तब मेरा ध्यान . . . की ओर आकर्षित किया गया”; इन बातों में कुछ छोटे-मोटे संशोधन किए गए हैं।

तेरह अनुच्छेदों में दस मुख्य सत्य प्रकट किए गए

परन्तु, मैं चाहता हूँ कि मूल लेख के इन तेरह अनुच्छेदों में आप यह देखें कि उसने दस मुख्य बातें प्रस्तुत की हैं।

और अब मुझे स्मरण आता है कि मैंने इन बातों को गाढ़े अक्षरों में क्यों रखा है। इसका कारण यह नहीं है कि इनमें परिवर्तन होने वाला है। यदि आप देखेंगे, तो मैं आपके लिए एक बात पर बल दे रहा हूँ कि इन तेरह अनुच्छेदों में उसे यह दिखाया गया था . . . , उसे यह दिखाया गया था . . . , उसे यह दिखाया गया था . . . , उसे यह दिखाया गया था। और जब उसे एक बात दिखाई गई, तब उसके विषय में हमें बताने के बाद उसे फिर कुछ ऐसा दिखाया गया जो आवश्यक नहीं कि उससे संबद्ध हो जो उसे अभी-अभी दिखाया गया था: “मुझे यह दिखाया गया था . . . ; मुझे यह दिखाया गया था . . . ; मुझे यह दिखाया गया था”

आप स्वयं इसकी जाँच कर सकते हैं और इसे स्वयं पढ़ सकते हैं, परन्तु इन तेरह अनुच्छेदों में उसे दस प्रमुख सत्य दिखाए गए थे।

उसे यह दिखाया गया था। उसे परमेश्वर के प्रेम के विषय में, भेंटों के विषय में, रोगियों के लिए प्रार्थना के विषय में, प्रभुभोज-सेवा के विषय में, सहस्राब्दी से संबंधित सात अंतिम विपत्तियों के विषय में, नई ज्योति के विषय में, 1844 के बाद एकत्रीकरण के विषय में, प्रकाशन-कार्य के विषय में, 1843 के चार्ट के विषय में, “डेली” के विषय में, परीक्षा के रूप में “समय” के विषय में, और यरूशलेम की तीर्थयात्राओं के विषय में दिखाया गया था। और यदि आप इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें, तो यह विचार-प्रवाह नहीं है। यह बहुत हद तक ऐसा है, “मुझे यह दिखाया गया,” और वह जो उसे दिखाया गया था, उसे लिपिबद्ध करती है; और, उसे ऐसी बात भी दिखाई गई थी जो आवश्यक नहीं कि परस्पर संबद्ध हो। आपको यह देखना होगा; क्योंकि, जब वे इन अनुच्छेदों को एक साथ जोड़ने लगते हैं, तो वे यह धारणा उत्पन्न करने लगते हैं कि वह कुछ ऐसा कह रही है जो वास्तव में उसने कहा ही नहीं।

रिव्यू ऐंड हेरल्ड, 1 नवंबर, 1850

ठीक है। उन पाँच अनुच्छेदों में से, जिन पर हम नवंबर 1850 से विचार कर रहे हैं, पहले अनुच्छेद पर ध्यान दीजिए।

“23 सितंबर को प्रभु ने मुझे दिखाया कि उसने दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया है, ताकि अपनी प्रजा के बचे हुए लोगों को पुनः प्राप्त करे; और यह कि इस इकट्ठा करने के समय में प्रयत्नों को दुगुना किया जाना चाहिए। तितर-बितर करने के समय इस्राएल को मारा गया और फाड़ डाला गया; परन्तु अब, इकट्ठा करने के समय, परमेश्वर अपनी प्रजा को चंगा करेगा और उनके घावों को बाँधेगा। तितर-बितर करने के समय सत्य के प्रचार के

लिए किए गए प्रयत्नों का बहुत थोड़ा प्रभाव हुआ, वे बहुत थोड़ा, अथवा कुछ भी, सिद्ध न कर सके; परन्तु इकट्ठा करने के समय, जब परमेश्वर ने अपनी प्रजा को इकट्ठा करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया है, सत्य के प्रचार के प्रयत्न अपना अभिप्रेत प्रभाव उत्पन्न करेंगे। सब को कार्य में एकचित्त और उत्साही होना चाहिए। मैंने देखा कि अब, इस इकट्ठा करने के समय में, किसी के लिए यह लज्जा की बात है कि वह हमारे संचालन के लिए तितर-बितर करने के समय के उदाहरणों का सहारा ले; क्योंकि यदि परमेश्वर अब हमारे लिए उससे अधिक न करे जितना उसने तब किया था, तो इस्राएल कभी इकट्ठा न किया जाता। यह उतना ही आवश्यक है कि सत्य एक पत्र में प्रकाशित किया जाए, जितना कि उसका प्रचार किया जाए।” —

उस अनुच्छेद का अंतिम वाक्य कहता है, “यह उतना ही आवश्यक है कि सत्य को एक पत्र में प्रकाशित किया जाए, जितना कि उसका प्रचार किया जाए।” ठीक है। इस विचार को छोड़ दिया जाएगा।

जिन पाँच अनुच्छेदों पर हम विचार कर रहे हैं, उनमें से दूसरे अनुच्छेद में, जहाँ यह कहा गया है, “प्रभु ने मुझे दिखाया,” आप देखते हैं कि मैंने उसे रेखांकित किया है।

—“प्रभु ने मुझे दिखाया कि 1843 का चार्ट उसके हाथ के द्वारा निर्देशित था, और उसका कोई भी भाग परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए; कि संख्याएँ वैसी ही थीं जैसी वह चाहता था। कि उसका हाथ उसके ऊपर था और उसने संख्याओं में से कुछ की एक त्रुटि को छिपा रखा था, ताकि जब तक उसका हाथ न हटा लिया जाए, कोई उसे देख न सके।”—

इस पृष्ठ के शीर्ष पर इन चार अनुच्छेदों में मैंने जो कुछ भी रेखांकित किया है, उसका कारण यह है कि जब 1851 में *A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White* में इसका पुनर्मुद्रण होगा, तब उनमें संपादकीय परिवर्तन किए जाएंगे।

ठीक है। “प्रभु ने मुझे दिखाया,” को बदला जाएगा; “उसके हाथ के द्वारा” को बदला जाएगा, “कि उसके किसी भी भाग में परिवर्तन न किया जाए” को बदला जाएगा।

तब पृष्ठ पर अगला बोल्ड अक्षरों वाला अनुच्छेद [चौथा अनुच्छेद] यह कहता है,

—“प्रभु ने मुझे दिखाया कि 1844 से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और समय फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।”—

“प्रभु ने मुझे दिखाया,” यह परिवर्तित किया जाने वाला है। अगले वर्ष वे *A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White* में क्या करने जा रहे हैं, यह है कि वे उस एक-वाक्य वाले अनुच्छेद को लेंगे और उसे पिछले अनुच्छेद के साथ मिला देंगे। वे उसे एक ही अनुच्छेद में परिवर्तित कर देंगे।

परन्तु, साथ ही, यदि कोई शब्द या शब्दसमूह गाढ़े अक्षरों में हो, तो प्रकार-विन्यास में कुछ अन्य परिवर्तन भी होने वाले हैं; और, मैं आपको एक उदाहरण दूँगा कि मेरा क्या अभिप्राय है।

और तीसरे अनुच्छेद में यह कहा गया है,

—“तब मैंने ‘नित्य’ के संबंध में देखा कि ‘बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है; और यह कि प्रभु ने उसकी सही समझ उन लोगों को दी जिन्होंने न्याय की घड़ी की पुकार दी। जब 1844 से पहले एकता विद्यमान थी, तब लगभग सभी ‘नित्य’ के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद, इस भ्रम की अवस्था में, अन्य विचारों को अपना लिया गया, और उसके पीछे अन्धकार और भ्रम ने अनुसरण किया।”—

फिर पृष्ठ पर अगला गाढ़े अक्षरों वाला अनुच्छेद [चौथा अनुच्छेद] कहता है,

“प्रभु ने मुझे दिखाया कि 1844 से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और समय फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।”—

“प्रभु ने मुझे दिखाया,” यह परिवर्तित किया जाने वाला है।

अगले वर्ष वे *A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White* में जो करने जा रहे हैं, वह यह है कि वे उस एक-वाक्यीय अनुच्छेद को लेकर उसे पिछले अनुच्छेद के साथ संयोजित कर देंगे। वे उसे एक ही अनुच्छेद में बदल देंगे।

और वे “प्रभु ने मुझे दिखाया” को बदलकर “मुझे भी दिखाया गया” करने जा रहे हैं। ठीक है? वे उन दो अनुच्छेदों को एक ही अनुच्छेद बना देंगे, और 1851 में उसे बदलकर यह कर देंगे, “मुझे भी दिखाया गया।”

—“तब मेरा ध्यान कुछ ऐसे लोगों की ओर दिलाया गया, जो इस बड़ी भूल में हैं कि प्रभु के आने से पहले संतों को अभी पुराने यरूशलेम जाना है, आदि। ऐसा मत मन और रुचि को तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के अधीन परमेश्वर के वर्तमान कार्य से हटाने के लिए उपयुक्त है; क्योंकि यदि हमें यरूशलेम जाना है, तो स्वाभाविक ही हमारा मन वहीं लगा रहेगा, और हमारे साधन अन्य कार्यों में लगाए जाने से रोक लिए जाएँगे, ताकि संतों को यरूशलेम पहुँचाया जा सके। मैंने देखा कि जिस कारण उन्हें इस बड़ी भूल में पड़ जाने दिया गया, वह यह है कि उन्होंने अपनी उन भूलों को, जिनमें वे बीते कई वर्षों से पड़े रहे हैं, न तो स्वीकार किया है और न ही त्यागा है।” *Review and Herald*, November 1, 1850.

परंतु, जब आप *Early Writings* तक पहुँचते हैं, तो क्या आप जानते हैं कि वे क्या करते हैं? वे “I was also shown” को हटा देते हैं, जबकि *Early Writings* में इसी एक अनुच्छेद में यह कहा जाने वाला है, “When union existed before 1844, nearly all were united on the correct view of the ‘Daily,’ but since 1844, in the confusion, other views have been embraced, and darkness and confusion has followed.” उन्होंने “I was also shown” को हटा दिया, और अगला वाक्य है, “time had not been a test since 1844.” तब अचानक आपको यह ज्ञात नहीं रहता कि समय के परीक्षा न होने के विषय में यह विचार उन बातों में से एक है, जो उसे विशेष रूप से दिखाई गई थीं। आप यह मान बैठते हैं कि यह *Daily* के विषय में उसके प्रकाश का भाग था, जिसमें मिथ्या दृष्टिकोण भ्रम उत्पन्न कर रहा था।

वह मूल नहीं है। मूल आपके पास है। उसकी जाँच कीजिए।

अगला चरण (दूसरा चरण)—1851 एलेन जी. व्हाइट के मसीही अनुभव और दृष्टिकोण का एक रेखाचित्र

फिर इसके अंतर्गत आपके पास 1851 में मुद्रित Ellen G. White की *A Sketch of the Christian Experience and View* है; और आपके पास उन परिवर्तनों का विवरण है जो घटित हुए, और उनमें एक अत्यन्त, अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

“23 सितंबर को प्रभु ने मुझे दिखाया [पूर्व में—“दिखाया”] कि उसने अपने लोगों के बचे हुएों को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया है, और इस एकत्रीकरण के समय में प्रयत्नों को दुगुना किया जाना चाहिए। तितर-बितर किए जाने के समय इस्राएल को मारा गया और फाड़ा गया; परन्तु अब, इस एकत्रीकरण के समय में, परमेश्वर अपने लोगों को चंगा करेगा और उनके घावों पर पट्टी बाँधेगा। तितर-बितर किए जाने के समय सत्य को फैलाने के लिए किए गए प्रयत्नों का प्रभाव बहुत अल्प था, उन्होंने बहुत थोड़ा या कुछ भी सिद्ध नहीं किया; परन्तु इस एकत्रीकरण के समय में, जब परमेश्वर ने अपने लोगों को एकत्र करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया है, सत्य को फैलाने के प्रयत्न अपना अभिप्रेत प्रभाव उत्पन्न करेंगे। सबको कार्य में एकचित्त और उत्साही होना चाहिए। मैंने देखा कि किसी के लिए भी अब इस एकत्रीकरण के समय में हमारा मार्गदर्शन करने हेतु तितर-बितर किए जाने के समय के उदाहरणों का उल्लेख करना गलत था; क्योंकि यदि परमेश्वर अब हमारे लिए उससे अधिक कुछ न करे जितना उसने तब किया था, तो इस्राएल कभी भी एकत्र न किया जाता। [हटाया गया: यह उतना ही आवश्यक है कि सत्य को किसी पत्र में प्रकाशित किया जाए, जितना कि उसका प्रचार किया जाए।] [अनुच्छेद संयुक्त] मैंने देखा है [पूर्व में—“प्रभु ने मुझे दिखाया”] कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित था, [पूर्व में—“उसके हाथ द्वारा”] और उसमें परिवर्तन

नहीं किया जाना चाहिए; [पूर्व में—“उसका कोई भाग परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए”] कि अंक वैसे ही थे जैसे वह उन्हें चाहता था। कि उसका हाथ उस पर था, और उसने कुछ अंकों में एक भूल को छिपा रखा था, ताकि कोई उसे देख न सके, जब तक कि उसका हाथ हटा न लिया गया।”

“तब मैंने —नित्य’ के संबंध में देखा कि —बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है; और यह कि प्रभु ने उसके विषय में सही दृष्टिकोण उन्हें दिया जिन्होंने न्याय-घड़ी की पुकार दी। जब एकता विद्यमान थी, 1844 से पहले, तब लगभग सभी —नित्य’ के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद, भ्रम की स्थिति में, अन्य विचारों को अपनाया गया, और उसके पीछे अन्धकार और भ्रम आए। [अनुच्छेद संयुक्त] मैंने यह भी देखा [पूर्व में—“प्रभु ने मुझे दिखाया”] कि 1844 के बाद से समय परीक्षा नहीं रहा था, और समय फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।” A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White, ExV 61-62.

तीसरे स्वर्गदूत के संदेश से संबद्ध समय

एलेन व्हाइट को उस दर्शन से भिन्न एक और दर्शन प्राप्त हुआ था, जो अंततः अर्ली राइटिंग्स में सम्मिलित हुआ। उन्हें कई दर्शन हुए थे; परन्तु, एक दर्शन में उनसे कुछ कहा गया; उनसे एक अनुच्छेद कहा गया, और उन्होंने उसे लिख लिया।

“प्रभु ने मुझे दिखाया है कि तीसरे स्वर्गदूत का संदेश अवश्य जाना चाहिए, और प्रभु की तितर-बितर संतान के बीच उसका प्रचार किया जाना चाहिए, और उसे समय पर आधारित नहीं किया जाना चाहिए; क्योंकि समय फिर कभी परीक्षा नहीं ठहरेगा। मैंने देखा कि कुछ लोग समय का प्रचार करने से उत्पन्न होने वाले एक मिथ्या उत्तेजना में आ रहे थे; कि तीसरे स्वर्गदूत का संदेश समय से अधिक सामर्थी था। मैंने देखा कि यह संदेश अपनी ही नींव पर स्थिर रह सकता है, और इसे सुदृढ़ करने के लिए समय की आवश्यकता नहीं है, और यह महान सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ेगा, और अपना कार्य करेगा, और धार्मिकता में संक्षिप्त किया जाएगा।” A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White, ExV 48.

वह वहाँ किस विषय में बोल रही है? क्या इस विषय में कि हमें तृतीय स्वर्गदूत के संदेश को फिर कभी समय के साथ नहीं जोड़ना चाहिए, है न?

आमीन? क्या आप मेरे साथ हैं?

आप इसे कहाँ पाते हैं? यह कहाँ स्थित है?

श्रोतागण की ओर से: (कोई उत्तर नहीं।)

श्रोताओं की ओर से: मसीही अनुभव और दृष्टिकोणों की एक रूपरेखा।

ईसाई अनुभव और एलेन जी. व्हाइट के विचारों की रूपरेखा, पृष्ठ 48, पृष्ठ 48।

ठीक है। हम जिस अंश पर चर्चा कर रहे हैं, जो Review and Herald, November 1850 से लिया गया है, वह A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White में कहाँ स्थित है? तो, यदि आप अपने नोट्स में पीछे जाएँ, तो वह A Sketch of the Christian Experience and Views of Ellen G. White के पृष्ठ 61 और पृष्ठ 62 पर स्थित है।

आपके पास Ellen G. White की A Sketch of the Christian Experience and Views में एक दर्शन है, जो पृष्ठ 48 पर दर्ज है; फिर आपके पास वह दर्शन है, जो अंततः Early Writings में, पृष्ठ 61 और 62 पर आने वाला है। वे 13 या 14 पृष्ठों के अंतर से अलग हैं, है न?

और जब प्रारम्भिक लेखन के विषय में बात आएगी, तब वे क्या करने जा रहे हैं? वे पृष्ठ 48 से इस अनुच्छेद को लेकर उसे उसके उस कथन के ठीक बाद जोड़ देंगे कि समय अब और परीक्षा नहीं रहा। वे दो दर्शनों को एक साथ रख देंगे।

क्या आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या अभिप्राय है?

सभागृह में एक व्यक्ति: जी हाँ।

क्या आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या अभिप्राय है?

श्रोताओं में संबोधित व्यक्ति: (पुष्टिकरण।)

ठीक है, क्योंकि आप ही वह व्यक्ति हैं जिनके संबंध में मुझे कम पुष्टिकरण दिखाई दे रहा है।

अंतिम चरण (तीसरा चरण)—1882 आरंभिक लेखन

ठीक है। अब मैं आपकी टिप्पणियों के पृष्ठ 6 पर वापस आ गया हूँ; और अब आपके सामने फिर से Early Writings है।

“23 सितंबर, . . . मैंने देखा है कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ के द्वारा निर्देशित था, और यह कि उसमें परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए; कि संख्याएँ वैसी ही थीं जैसी वह चाहता था; कि उसका हाथ उन संख्याओं में से कुछ में एक त्रुटि पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि कोई उसे देख न सके, जब तक कि उसका हाथ हटा न लिया गया।”

“तब मैंने ‘नित्य’ (दानियेल 8:12) के संबंध में देखा कि ‘बलिदान’ शब्द मनुष्य की बुद्धि द्वारा जोड़ा गया था, और वह मूल पाठ का भाग नहीं है, और प्रभु ने उसका सही दृष्टिकोण उन्हें दिया जिन्होंने न्याय-घंटे की पुकार दी। 1844 से पहले, जब एकता विद्यमान थी, लगभग सभी ‘नित्य’ के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद की उलझन में, अन्य दृष्टिकोण अपना लिए गए, और उसके परिणामस्वरूप अन्धकार और भ्रम हुए। 1844 के बाद से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और वह फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।”

“प्रभु ने मुझे दिखाया है कि तीसरे स्वर्गदूत का संदेश अवश्य आगे बढ़ना चाहिए, और प्रभु की तितर-बितर सन्तानों के बीच घोषित किया जाना चाहिए, परन्तु उसे समय पर आधारित नहीं किया जाना चाहिए। मैंने देखा कि कुछ लोग समय का प्रचार करने से उत्पन्न होने वाले झूठे उत्तेजना-भाव में पड़ रहे थे; परन्तु तीसरे स्वर्गदूत का संदेश समय की अपेक्षा अधिक सामर्थी है। मैंने देखा कि यह संदेश अपनी ही नींव पर स्थिर रह सकता है और इसे दृढ़ करने के लिए समय की आवश्यकता नहीं है; और यह महान सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ेगा, और अपना कार्य करेगा, और धर्म में शीघ्र पूरा किया जाएगा।”

“तब मेरा ध्यान उन कुछ लोगों की ओर आकर्षित किया गया, जो इस बड़ी भूल में हैं कि यह विश्वास करते हैं कि पुरानी यरूशलेम जाना उनका कर्तव्य है . . .” Early Writings, 74-76.

और इसका कारण कि यह गाढ़े अक्षरों में है, यही वह अनुच्छेद है जहाँ यह कहता है, “. . . जब एकता विद्यमान थी, 1844 से पहले, लगभग सभी ‘नित्य’ के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद से उत्पन्न भ्रम में, अन्य दृष्टिकोण अपना लिए गए, और उनके पीछे अंधकार और भ्रम चला आया। 1844 के बाद से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है, और वह फिर कभी परीक्षा नहीं होगा।” आपको यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि मूलतः इस दर्शन के अपने प्रथम अभिलेख में उसने कहा था, “मुझे दिखाया गया कि 1844 के बाद से समय कोई परीक्षा नहीं रहा है,” और वह एक भिन्न अनुच्छेद था। उसने यह सुनिश्चित किया था कि जो उसे ‘नित्य’ के विषय में दिखाया गया था और जो उसे समय के परीक्षा होने के विषय में दिखाया गया था, उनमें स्पष्ट भेद रहे; और यह कि अगला अनुच्छेद, जो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ किसी समय-निर्धारण को न जोड़ने की बात करता है, मूल दर्शन में नहीं था। वह Life Sketches के पृष्ठ 48 पर था, पृष्ठ 61 और 62 पर नहीं।

परंतु जब आप 1882 में प्रकाशित Early Writings पर आते हैं, तो उन्होंने उन्हें एक साथ जोड़ दिया; और इसलिए, जब आप 1930 के दशक में पहुँचते हैं और ऐडवेंटिज़्म में गहरे अंधकार की ओर भटक रहे होते हैं, और विली व्हाइट यह कहता है कि जब आप “the Daily” का अध्ययन करें तो आपको उसका अध्ययन समय के संदर्भ में करना चाहिए—“क्षमा कीजिए, विली, आपकी ज़िम्मेदारी यह थी कि आप Spirit of Prophecy का सही ऐतिहासिक अभिलेख प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति होते। आपको ही Spirit of Prophecy का प्रतिवाद करने वाला व्यक्ति होना था। और Early Writings, पृष्ठ 75, की अपनी प्रस्तुति में आपने मूल स्रोतों की उपेक्षा की, और वे मूल स्रोत यह कहते हैं कि जब आपने Early Writings, 74 में यह तर्क उठाया कि “the Daily” पर समय के संदर्भ में विचार किया जाना चाहिए, तो यह पूर्णतः असत्य है।” — यह असत्य है! इसे Spirit of Prophecy के अभिलेख द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता। उस समयावधि के इतिहास द्वारा भी इसे सिद्ध नहीं किया जा सकता।

ठीक है। बिंदु 1, सिस्टर व्हाइट कहती हैं कि “the Daily” के विषय में एक सही दृष्टिकोण है, Early Writings, 74 में। बाद के इतिहास में जो मुख्य तर्क थोपा गया, वह यह है कि जब आप Early Writings, 74 के उस अंश का अध्ययन करते हैं, तो आपको उसे समय-निर्धारण के संदर्भ में रखना चाहिए। यह तर्क मिथ्या है; यह मान्य नहीं है!

अतः, अब हमारे पास केवल यही स्थिति रह जाती है कि “डेली” के विषय में एक सही दृष्टिकोण है। ठीक है? परन्तु, हम इस अनुच्छेद से एक और विचार ग्रहण करने जा रहे हैं।

उसमें लिखा है, “23 सितम्बर को, प्रभु ने मुझे दिखाया . . . ।” 23 सितम्बर को, कब? 1850 में: “23 सितम्बर, 1850 को, प्रभु ने मुझे दिखाया।”

उसने उसे क्या दिखाया?

खैर, जिन बातों में से एक उसने उसे दिखाई, वह यह थी कि 1844 से लेकर अब तक नित्य के विषय में अन्य मत स्वीकार किए गए हैं।

“23 सितंबर, 1850 को प्रभु ने मुझे दिखाया . . . जब 1844 से पहले एकता विद्यमान थी, तब प्रायः सब के सब ‘डेली’ के विषय में सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद, भ्रम की स्थिति में, अन्य दृष्टिकोण अपना लिए गए, और उनके पीछे अन्धकार और भ्रम आया। द रिच्यू एंड हेरल्ड, नवंबर 1850।”

मार्च 1850 — “दैनिक” पार्थिव पवित्रस्थान है

अतः, पृष्ठ 6 के निचले भाग में आपके पास एक अनुच्छेद है, जो मार्च 1850 के Review and Herald से लिया गया है, और वह डेविड आर्नोल्ड द्वारा लिखित एक लेख है।

“वह [दानियेल] उसी उत्पीड़क शक्ति को भी देखता है—‘जो प्रधानों के प्रधान के विरुद्ध खड़ी होती है;’ इस प्रकार सीनै पर स्थापित उन सब नित्य बलिदानों की वैधता का अंत कर देती है, जिन्हें प्रतिदिन मानना था जब तक कि वंश न आ जाए। यहाँ मसीह, जो वास्तविक तत्त्व, अथवा महान प्रतिरूपात्मक बलिदान था, रोमी सैनिकों के द्वारा घात किया गया। इस प्रकार रोम के द्वारा—‘नित्य बलिदान उठा लिया गया,’ और उसके पवित्रस्थान का स्थान रोमी सेनापति तीतुस द्वारा ढा दिया गया, जब उसने यरूशलेम नगर और परमेश्वर के मन्दिर को, जिसमें—‘पवित्रस्थान’—था, नष्ट कर दिया। यहाँ मसीह की भविष्यसूचक घोषणा की पूर्ति आरम्भ हुई। ‘और वे तलवार की धार से गिरेंगे, और सब जातियों में बन्दी करके ले जाए जाएँगे; और यरूशलेम अन्यजातियों के पैरों तले रौंदा जाएगा, जब तक कि अन्यजातियों के समय पूरे न हो जाएँ।’ लूका 21:24।” डेविड आर्नोल्ड, Review and Herald, मार्च 1850, खंड 1, संख्या 8.

इस लेख में डेविड आर्नोल्ड यह सिखाते हैं कि दानियेल की पुस्तक में उल्लिखित “नित्य” यरूशलेम में स्थित यहूदी पवित्रस्थान का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे सन् 70 ईस्वी में मूर्तिपूजक रोम द्वारा हटा दिया गया।

सितंबर 1850 “नित्य” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा है

फिर सितंबर 1850 में, उसी वर्ष—और वैसे, 1850 में Review and Herald का संपादक कौन है? उसका नाम जेम्स व्हाइट है।

तदनुसार, सितंबर 1850 में, जेम्स व्हाइट क्रोजियर द्वारा एक लेख प्रकाशित करते हैं, जो यह शिक्षा देता है कि “Daily” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा का प्रतिनिधित्व करता है।

अब, जेम्स व्हाइट इसे प्रत्यक्ष रूप से नहीं सिखाते, पर लोग वहाँ निहितार्थ ग्रहण करके कहते हैं कि वही वह सिखा रहे हैं। और मैं यह क्यों कह रहा हूँ? मैं यह उनके इस कथन के कारण कह रहा हूँ: सितंबर 1850 में, सिस्टर व्हाइट कहती हैं कि 1844 के बाद से “दैनिक” के संबंध में अन्य मत अंधकार में अपनाए गए हैं, और उसके परिणामस्वरूप भ्रम उत्पन्न हुआ है।

ये दोनों मत [Arnold और Crosier] वह अग्रदूतों का मत नहीं हैं कि “Daily” मूर्तिपूजकता है।

और पृष्ठ 7 पर आपके पास क्रोसियर के लेख के वे दो अनुच्छेद हैं, जहाँ वह यह निष्कर्ष निकाल रहा है कि “Daily” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा है।

“—और उसके पवित्रस्थान का स्थान गिरा दिया गया;” दानिय्येल 8:11। यह गिराया जाना रोमी शक्ति के दिनों में और उसके माध्यम से हुआ; इसलिए इस पाठ का पवित्रस्थान न तो पृथ्वी था, और न ही पलिश्टीन, क्योंकि पहली तो पतन के समय, 4,000 से भी अधिक वर्ष पहले, गिराई गई थी, और दूसरा बन्दीगृह के समय, इस पद के प्रसंग की घटना से 700 से भी अधिक वर्ष पूर्व; और इनमें से कोई भी रोमी माध्यम से नहीं हुआ।

“गिराया गया पवित्रस्थान उसी का है, जिसके विरुद्ध रोम ने अपने आप को बड़ा ठहराया, जो सेना का प्रधान था, अर्थात् यीशु मसीह; और पौलुस सिखाता है कि उसका पवित्रस्थान स्वर्ग में है। फिर, दानिय्येल 11:30-31, —कित्तीम के जहाज़ उसके विरुद्ध आएँगे; इसलिए वह खेदित होगा और लौटेगा, और पवित्र वाचा (मसीही धर्म) के विरुद्ध क्रोध करेगा (ताड़ना देनेवाला दण्ड), और ऐसा ही करेगा; वह फिर लौटेगा और उन लोगों (याजकों और बिशपों) से मिल जाएगा जो पवित्र वाचा को त्याग देते हैं। और सेनाएँ (नागरिक और धार्मिक) उसके पक्ष में खड़ी होंगी, और वे (रोम और वे जो पवित्र वाचा को त्याग देते हैं) बल के पवित्रस्थान को अपवित्र करेंगे।’ यह क्या था, जिसे रोम और मसीही धर्म के प्रेरित संयुक्त रूप से अपवित्र करें? यह संधि —पवित्र वाचा’ के विरुद्ध बनाई गई थी, और उसी वाचा के पवित्रस्थान को उन्होंने अपवित्र किया; जैसा वे परमेश्वर के नाम को भी अपवित्र कर सकते थे; यिर्मयाह 34:16; यहजकेल 20; मलाकी 1:7। यह उसके नाम को अपवित्र या ईशनिन्दित करने के समान ही था। इसी अर्थ में इस —राजनीतिक-धार्मिक’ पशु ने पवित्रस्थान को अपवित्र किया, (प्रकाशितवाक्य 13:6), और उसे स्वर्ग में उसके स्थान से गिरा दिया, (भजन संहिता 102:19; यिर्मयाह 17:12; इब्रानियों 8:1-2) जब उन्होंने रोम को पवित्र नगर कहा, (प्रकाशितवाक्य 21:2) और वहाँ पोप को —प्रभु परमेश्वर पोप’, —पवित्र पिता’, —कलीसिया का प्रधान’, आदि उपाधियों सहित प्रतिष्ठित किया; और वहाँ, परमेश्वर के जालसाज़ —मन्दिर’ में, वह यह दावा करता है कि वह वही करता है जो यीशु वास्तव में अपने पवित्रस्थान में करता है; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-8। पवित्रस्थान पैरों तले रौंदा गया है (दानिय्येल 8:13), उसी प्रकार जैसे परमेश्वर का पुत्र रौंदा गया है। (इब्रानियों 10:29.)” O. R. L. Crosier, —The Sanctuary’, Review and Herald, September, 1850.

जेम्स वाइट का तर्क

यदि जेम्स व्हाइट बेहतर जानते थे, तो वे इस लेख को क्यों छापते? इसका कारण आपकी टिप्पणियों में “जेम्स व्हाइट का तर्क” है।

निराशा के बाद जो पहली वस्तु मुद्रित की गई, उसका शीर्षक था A Word to the Little Flock, और उस प्रकाशन के तीन लेखक जेम्स और एलेन व्हाइट तथा जोसेफ बेट्स थे। 22 अक्टूबर, 1844 के बाद, मार्ग पर चलते रहने वाले उन लोगों द्वारा जो पहली वस्तु मुद्रित की गई, वह यही लेख था; और इस लेख में सिस्टर व्हाइट क्रोसियर के विचार का समर्थन करती हैं—उसके “Daily” संबंधी विचार का नहीं, बल्कि उसके इस विचार का कि मसीह पवित्र स्थान से परमपवित्र स्थान में चले गए।

ध्यान दें, यह सिस्टर व्हाइट हैं। यही कारण है कि जेम्स व्हाइट क्रॉज़ियर के लेख को प्रकाशित करने के लिए तत्पर होते; इसमें कहा गया है,

“मैं विश्वास करता हूँ कि 2300 दिनों के अंत में जिस पवित्रस्थान का शुद्धिकरण किया जाना है, वह नया यरूशलेम मन्दिर है, जिसका मसीह सेवक है।”—यह एलेन व्हाइट हैं—“प्रभु ने मुझे दर्शन में, एक वर्ष से अधिक पहले, यह दिखाया कि भाई क्रोज़ियर के पास पवित्रस्थान के शुद्धिकरण आदि के विषय में सत्य ज्योति थी; और यह उसकी इच्छा थी कि भाई C. उस मत को लिखें, जो उन्होंने हमें Day-Star, Extra, February 7, 1846 में दिया था। मैं प्रभु की ओर से इस Extra की प्रत्येक पवित्र जन को सिफारिश करने के लिए अपने को पूर्णतया अधिकृत अनुभव करती हूँ।”

“मैं प्रार्थना करता हूँ कि ये पंक्तियाँ आपके लिए, और उन सब प्रिय बालकों के लिए जो इन्हें पढ़ें, आशीष सिद्ध हों।” A Word to the Little Flock, May 12, 1847.

इसलिए, आज तक लोग—एडवेंटिज़्म के कुछ आधुनिक इतिहासकार भी—कहते हैं, “उधर देखिए। एलेन व्हाइट क्रोज़ियर के लेख पर अपना समग्र अनुमोदन दे रही हैं; और इसलिए, ‘डेली’ के विषय में क्रोज़ियर ने जो कहा कि वह मसीह की पवित्रस्थान-सेवा है, वह सत्य होना ही चाहिए।” और जब वे ऐसा कहते हैं, तो वे इतिहास का मिथ्या निरूपण कर रहे होते हैं; क्योंकि, क्रोज़ियर के लेख में आठ खंड थे और, आरंभ से ही, एडवेंटिस्टों ने समझ लिया था कि उन खंडों में से चार पूर्ण अंधकार थे, और वे एडवेंटिज़्म में कभी भी, कभी भी, कभी भी पुनर्मुद्रित नहीं किए गए।

उदाहरण के रूप में, उस लेख में उनकी एक धारणा यह थी कि जब यीशु लौटेंगे, तब एक हज़ार वर्षों की शान्ति होगी। एडवेंटिस्ट इस बात पर विश्वास नहीं करते, और उन्होंने कभी किया भी नहीं। वह समझ ऐसी समझ है जिसे विलियम मिलर ने अस्वीकार किया था, और यही वास्तव में विलियम मिलर को सत्य को समझने के सही मार्ग पर स्थापित करती है। वह शिक्षा उन शिक्षाओं में से एक है जो मिलराइट समझ के प्रत्यक्षतः विपरीत है।

अतः, जब क्रोज़ियर इस आठ-भागीय लेख के साथ सामने आता है, तो वे आरम्भ से ही जानते हैं कि इन भागों में से चार पुनर्मुद्रण के योग्य नहीं हैं।

परन्तु, जेम्स व्हाइट उस भाग को मुद्रित करता है जहाँ क्रोज़ियर यह निष्कर्ष निकालता है कि “दैनिक” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा है; परन्तु, वह केवल उन चार भागों को ही पुनर्मुद्रित करने वाला है। वह अन्य चारों को पुनर्मुद्रित नहीं करने वाला। परन्तु, जेम्स व्हाइट के लिए क्रोज़ियर के उन चार भागों को पुनर्मुद्रित करने हेतु उसे उन्हें दो अंकों में मुद्रित करना पड़ता है। उसे सितम्बर 1850 में उसे दो बार मुद्रित करना पड़ा।

सितंबर 1850 में उसके Review and Herald में पर्याप्त स्थान नहीं था, इसलिए उसने सितंबर 1850 में Review and Herald के दो अंक प्रकाशित किए, ताकि वह पवित्र स्थान से परमपवित्र स्थान में मसीह के स्थानांतरण पर क्रोज़ियर का पूरा लेख सम्मिलित कर सके।

अब, आप Gerard Damsteegt से यह ध्यान देंगे कि वे यह ऐतिहासिक मूल्यांकन प्रस्तुत कर रहे हैं कि Adventists सदा से जानते थे कि Crosier के लेखों के कुछ भाग त्रुटिपूर्ण थे और उन्हें पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकता था।

“उसने [एलेन हार्मन] कहा:—प्रभु ने मुझे एक दर्शन में, एक वर्ष से भी अधिक पहले, यह दिखाया कि भाई क्रोज़ियर के पास पवित्रस्थान के शुद्धीकरण आदि के विषय में सत्य ज्योति थी; और यह कि उसकी इच्छा थी कि भाई C. उस दृष्टिकोण को लिखें जो उन्होंने हमें Day Star Extra, February 7, 1846 में प्रस्तुत किया था। मैं प्रभु की ओर से पूरी तरह अधिकृत अनुभव करती हूँ कि उस Extra की अनुशंसा प्रत्येक संत से करूँ” (पत्र। ई. जी. व्हाइट से कर्टिस को, Word to the Little Flock, 12)। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्टों ने सामान्यतः इस कथन का यह अर्थ लगाया है कि क्रोज़ियर की प्रस्तुतियाँ त्रुटियों से सर्वथा रहित नहीं थीं, परंतु उनका मुख्य प्रतीकात्मक-प्रतिरूपात्मक तर्क सही था। लेख के पुनर्मुद्रणों में उन पक्षों को छोड़ दिया गया जिन्हें वे असटीक समझते थे।” पी. जेराई डैमस्टीगट, Foundations of the Seventh-day Adventist Message and Mission, 125.

उसके संपूर्ण दस्तावेज़ का पुनर्मुद्रण कभी नहीं किया जा सका।

अब, अगले पृष्ठ पर आपके पास W. A. Spicer उसी बात की गवाही देते हुए हैं: वे सदा जानते थे कि Crosier के लेखों में त्रुटि थी, और उन्होंने उन चार खंडों को कभी पुनर्मुद्रित नहीं किया।

यह कहते हुए खेद होता है कि युवा क्रोज़ियर ने सब के सत्य के प्रकाश में बहुत थोड़े समय तक ही चला। बाद में उसने उस पवित्रस्थान की शिक्षा का खण्डन कर दिया, जिसकी स्थापना में उसने स्वयं सहायता की थी। हमारे अग्रणी भाइयों ने अपने प्रारम्भिक पत्रों में पवित्रस्थान पर उसकी व्याख्या को कई बार पुनर्मुद्रित किया, परन्तु वे उसके सम्पूर्ण दस्तावेज़ को कभी पुनर्मुद्रित नहीं कर सके। उसमें उसने पवित्रस्थान की व्याख्या के साथ आनेवाले युग के विषय में कुछ विचार भी जोड़ दिए थे—एक लौकिक सहस्राब्दी, जिसमें दूसरे आगमन पर इसी पृथ्वी पर एक महिमामय युग हो। इन बातों को हमारे भाइयों ने सदा छोड़ दिया। उन दिनों आनेवाले युग की ये शिक्षाएँ सर्वत्र फैली हुई थीं। यह सिद्धान्त निश्चित आगमन-सन्देश के साथ कभी मेल नहीं खाता था; और निःसन्देह त्रुटि के इस खमीर ने युवा पुरुषों को सब और पवित्रस्थान के सत्यों से दूर ले जाने में सहायता की। शीघ्र ही वह हमारे प्रारम्भिक आन्दोलन का कटु विरोधी बन गया।” W. A. Spicer, Review and Herald, December 14, 1939

मुख्य बात यह है कि आज ऐसे लोग हैं जो A Word to the Little Flock में क्रोसियर के लेख के प्रति सिस्टर व्हाइट की अनुमोदन-स्वीकृति को ग्रहण करते हैं—हेडी हाइक्स जैसे लोग, अर्थात् हेडी हाइक्स अपनी उस मूर्खतापूर्ण पुस्तक के साथ, जिसमें यह कहा गया है कि “डेली” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा है। यह उसके तर्कों में से एक है।

जो लोग ऐसा करते हैं, वे ऐतिहासिक तथ्यों की उपेक्षा कर रहे हैं। वे कभी भी क्रोज़ियर के सभी लेखों का पुनर्मुद्रण नहीं कर सके। और यह आग्रह करना कि *A Word to the Little Flock* में एलेन व्हाइट की स्वीकृति क्रोज़ियर की स्थिति का समग्र अनुमोदन है, वस्तुतः यह आग्रह करना है कि एडवेंटिस्ट यह विश्वास करते हैं कि शांति के एक हज़ार वर्ष होने वाले हैं। यह एक मूर्खतापूर्ण तर्क है।

यह इतिहास का मिथ्याप्रस्तुतीकरण है, और यह लोगों को धोखा देने तथा भ्रम और अंधकार उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

अतः, आपके पास दो इतिहासकार हैं—स्पाइसर, जिनका देहांत हो चुका है, और डैमस्टीगट, जो अब भी जीवित हैं; परंतु मैं आपको आश्चर्य करता हूँ, स्पाइसर हो या डैमस्टीगट, उनमें से कोई भी मेरे द्वारा प्रस्तुत बातों से सहमत नहीं होगा। ठीक है, वे सहमत नहीं होंगे। इसलिए, आपके पास दो परस्पर-विरोधी इतिहासकार हैं जो उस बात के संबंध में एकमत हैं जो मैं आपको बता रहा हूँ। एलेन व्हाइट द्वारा क्रोसियर के लेख का अनुमोदन किए जाने को इस अर्थ में लेना कि उसमें सब कुछ पूर्णतः सिद्ध था, इसका तनिक भी कोई औचित्य नहीं है।

द एडवेंट रिव्यू—खंड 1, ऑबर्न, न्यूयॉर्क, संख्या 3

द एडवेंट रिव्यू—खंड 1, ऑबर्न, न्यूयॉर्क, संख्या 4

एडवेंट रिव्यू—खंड 1, ऑबर्न, न्यूयॉर्क, विशेष अंक

जब जेम्स व्हाइट ने सितंबर 1850 में *The Review and Herald* के Volume 1, Number 3 में क्रोज़ियर के लेख को छापना आरम्भ किया, तब वह Volume 1, Number 3 था।

परंतु, वह यह सब कुछ खंड 1, संख्या 3 में समाहित नहीं कर सका; इसलिए, उसने उस लेख को The Review and Herald, खंड 1, संख्या 4 में पूरा किया। और उसने यह कब किया? सितंबर 1850 में।

तो, सितंबर 1850 में क्या हुआ? सिस्टर व्हाइट को एक दर्शन हुआ, जिसमें कहा गया है, “23 सितंबर, 1850 को प्रभु ने मुझे दिखाया जब एकता विद्यमान थी, 1844 से पहले, तब लगभग सभी —Daily; के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; परन्तु 1844 के बाद, भ्रम की स्थिति में, अन्य मत अपना लिए गए, और अंधकार तथा भ्रम उसके पीछे-पीछे आया। The Review and Herald, November 1850.”

उसका पति कौन था? वह The Review and Herald का संपादक था।

तो, उसने क्या किया जब उसकी पत्नी ने कहा, “क्या तुम जानते हो कि प्रभु ने अभी मुझे क्या बताया, जेम्स? मुझे बताया गया कि हमें ‘डेली’ के उन विचारों को प्रस्तुत नहीं करना था जो इस अग्रदूत-समझ का विरोध करते हैं कि ‘डेली’ मूर्तिपूजकता है, क्योंकि यह अंधकार और भ्रम ला रहा है।”

तो, जेम्स व्हाइट ने क्या किया? सितंबर 1850 में उन्होंने Review and Herald का एक और अंक मुद्रित किया—एक ही महीने में तीन। इसे Volume 1, Special Edition कहा जाता है।

और उसने क्या किया? उसने क्रोज़ियर के लेख को पुनर्मुद्रित किया और “नित्य” के विषय में क्रोज़ियर ने जो कहा था, उसे हटा दिया!

भाइयों और बहनों, यह ऐतिहासिक प्रमाण है कि जेम्स और एलेन व्हाइट समझते थे कि “दैनिक” के विषय में क्रोज़ियर का दृष्टिकोण गलत था और वह अंधकार तथा भ्रम उत्पन्न करता था।

और “डेली” के विषय में क्रोज़ियर का क्या दृष्टिकोण था? यह कि वह मसीह की पवित्रस्थान-सेवा थी।

अतः, अर्ली राइटिंग्स, 74 में, जब वह कहती हैं, “23 सितंबर को, प्रभु ने मुझे दिखाया कि मिलेराइट्स की ‘डेली’ के विषय में समझ सही थी,” तो ऐतिहासिक प्रमाण यह है कि मिलेराइट्स यह समझते थे—

अब, भाइयो और बहनो, भाइयो और बहनो, इस तथ्य को अनदेखा न करें: यह क्या है? सितंबर 1850 में सिस्टर व्हाइट को दिखाया गया कि 1844 के बाद से “डेली” के संबंध में अन्य मत अपना लिए गए थे; मई 1850 में आर्नोल्ड “डेली” को यहूदी पवित्रस्थान के रूप में प्रस्तुत करता है; सितंबर 1850 में क्रोसियर के लेख का भाग 1 में से 2 प्रकाशित होता है, जिसमें “डेली” को मसीह की पवित्रस्थान-सेवा के रूप में उसकी प्रस्तुति सम्मिलित है; सितंबर 1850 में क्रोसियर के लेख का भाग 2 में से 2 प्रकाशित होता है; सितंबर 1850 में क्रोसियर का लेख पुनर्मुद्रित किया जाता है, परंतु “डेली” के विषय में उसका मत हटा दिया गया है? क्या घटित हो रहा है?

हम देखते हैं कि जिस उसी वर्ष यह 1850 का चार्ट तैयार किया गया, यह चार्ट दैनिक के विषय में क्या कहता है? “मूर्तिपूजक प्रभुत्व, अथवा दैनिक हटा दिया गया। दानि. 11:31, 508.”

एलेन व्हाइट जानती थीं कि जिन्होंने न्याय-घड़ी के पुकार का प्रचार किया, उनका “Daily” के विषय में क्या मत था। जब वह कहती हैं कि उनका दृष्टिकोण सही था, तब वह जानती थीं कि सही दृष्टिकोण यह था कि वह हटाया जा रहा अन्यजातीय प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व करता था; “Daily” अन्यजातिवाद का प्रतिनिधित्व करता था।

और इसी वर्ष, 1850 में, ऐतिहासिक अभिलेख यह सिद्ध करता है कि उसने और उसके पति ने इस शिक्षा को अस्वीकार कर दिया कि “डेली” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा का प्रतिनिधित्व करती है; यही वह शिक्षा है जिसका समर्थन सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया का बाइबिलिकल रिसर्च इंस्टिट्यूट करता है। यही वह शिक्षा है जिसका

समर्थन हार्टलैंड और स्टेप्स टू लाइफ जैसी स्व-समर्थित सेवकाइयाँ करती हैं। यही वह शिक्षा है जो अंधकार और भ्रम उत्पन्न करती है।

अब, 1850 के चार्ट के विषय में इस बात पर ध्यान दीजिए। यह नवम्बर 1850 की बात है। यही वह महीना है जिसमें उसे वह दर्शन प्राप्त होता है, जिसे वह लिपिबद्ध करती है और जो अंततः 1851 में क्रमिक विकास की प्रक्रिया से होकर, फिर 1882 में Early Writings में सम्मिलित हो जाता है—इसी महीने में, ठीक इसी महीने में, नवम्बर 1850 में। यह कहता है,

“सोमवार को हम डॉर्चेस्टर लौट आए, जहाँ हमारे प्रिय भाई निकोल्स और उनका परिवार रहते हैं।”

यहीं ऊपर [1850 के चार्ट के ऊपरी दाएँ कोने की ओर संकेत करते हुए], “ओटिस निकोल्स द्वारा प्रकाशित, डॉर्चेस्टर, मैसाचुसेट्स।” ठीक है? वह इसी के विषय में बात कर रही है, है न? क्या आप इसे देखते हैं, इस चार्ट को?

—“वहाँ रात में परमेश्वर ने मुझे एक अत्यन्त रोचक दर्शन दिया, जिसका अधिकांश आप पत्र में देखेंगे। परमेश्वर ने मुझे एक चार्ट प्रकाशित करने की आवश्यकता दिखाई। मैंने देखा कि इसकी आवश्यकता थी और यह कि पट्टिकाओं पर स्पष्ट की गई सत्यता बहुत प्रभाव उत्पन्न करेगी और आत्माओं को सत्य के ज्ञान तक आने का कारण बनेगी।”
Manuscript Releases, number 15, 210 November, 1850.

उसे डॉर्चेस्टर में निकोल्स के घर पर एक दर्शन हुआ—यह सब इस चार्ट पर है—जिसमें कहा गया, “तुम्हें एक चार्ट बनाना चाहिए।”

और वह उस चार्ट के विषय में क्या कहती है? वह उसका वर्णन कैसे करती है?

हबक्कूक 2 पर जाइए, “मैंने एक चार्ट प्रकाशित करने की आवश्यकता देखी,” और वह क्या करता? उसकी आवश्यकता थी, “कि सत्य को पट्टिकाओं पर स्पष्ट किया जाए।” हबक्कूक 2, पद 2, कहता है, “तब यहोवा ने मुझे उत्तर दिया और कहा, दर्शन को लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट कर दे, . . . ।” वह कह रही है कि डॉर्चेस्टर, मैसाचुसेट्स में मुद्रित यह ओटिस निकोल्स 1850 चार्ट, हबक्कूक की एक परिपूर्ति है, ठीक वैसे ही जैसे वह The Great Controversy में कहती है कि 1843 चार्ट हबक्कूक की एक परिपूर्ति है।

ठीक है, क्या आप इसे देखते हैं? क्या आप देखते हैं कि उसे यह दर्शन कब मिला? ठीक उसी समय जब यह सब घटित हो रहा था: “23 September, प्रभु ने मुझे दिखाया . . . कि ‘डेली’ की शिक्षा, मसीह की पवित्रस्थान-सेवा के रूप में, अंधकार और भ्रम उत्पन्न करती है,” और उसके पति ने तुरंत उस लेख को पुनर्मुद्रित किया और उन दो अनुच्छेदों को हटा दिया। फिर एडवेंटवाद में उसे 1931 तक कभी पुनर्मुद्रित नहीं किया गया, जब Willie White ने उसे पुनर्मुद्रित किया; और, जब उसने ऐसा किया, तो जिस पत्रक को उसने मुद्रित किया, उसी में कुछ झूठी गवाही भी थी। यह सिद्ध किया जा सकता है।

अब मैं यहाँ आपको इसी समयावधि के विषय में कुछ पढ़कर सुनाना चाहता हूँ—एक अपेक्षाकृत लंबा उद्धरण। यह 27 नवंबर, 1850 का है।

मैंने कुछ समय से आपको लिखने की उपेक्षा की है। अब मैं उसके कारण बताऊँगी। प्रथम, बहन Arabella का स्नेहपूर्ण और स्वागतयोग्य पत्र प्राप्त होने के बाद कई सप्ताह तक मुझे लिखने का समय नहीं मिला; अन्यथा, उसके पत्र का दो सप्ताह के भीतर उत्तर देने के उनके अनुरोध का मैं पालन कर लेती। वह पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। हम सब उस पत्र में रुचि रखते थे, और हमें आशा है कि मेरी इस देरी के कारण आप इसे पढ़ते ही शीघ्र उत्तर देने से विरत नहीं होंगी, और अगली बार मैं इतनी देर नहीं करूँगी।

अब याकूब और मेरा स्वास्थ्य काफी अच्छा है। हमारा घर पेरिस में, भाई एंड्रयूज़ के यहाँ है, जो डाकघर और मुद्रणालय से कुछ ही कदमों की दूरी पर है। हम यहाँ कुछ समय तक ठहरेंगे। यह एक बहुत ही दयालु परिवार है, तथापि अत्यन्त

निर्धन है। यहाँ उनके पास जो कुछ है, वह सब निःशुल्क उपलब्ध है। हम यह उचित नहीं समझते कि यहाँ रहते हुए उन पर किसी प्रकार का व्यय पड़ने दें। मैं आप सब से और प्रिय बहन गोरहैम से बहुत मिलने की इच्छा रखती हूँ।

टॉपशम में हमारा सम्मेलन अत्यन्त गहन रुचि का विषय था। वहाँ अट्टाईस व्यक्ति उपस्थित थे; सभी ने सभा में भाग लिया।

रविवार को परमेश्वर की सामर्थ्य प्रचण्ड वेगवाली वायु के समान हम पर उतरी। सब लोग अपने पैरों पर खड़े हो गए और ऊँचे शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगे; वह कुछ वैसा ही था जैसा तब हुआ था जब परमेश्वर के भवन की नेव डाली गई थी। रोने का शब्द जयजयकार के शब्द से अलग नहीं पहचाना जा सकता था। वह विजय का समय था; सब को बल मिला और वे ताज़गी से परिपूर्ण हो गए। इससे पहले मैंने ऐसा सामर्थ्यपूर्ण समय कभी नहीं देखा था।

“हमारा अगला सम्मेलन फ़ेयरहेवन में था। भाई बेट्स और उनकी पत्नी उपस्थित थे। वह अत्यन्त अच्छी सभा थी। भाई निकोल्स के यहाँ लौटने पर प्रभु ने मुझे एक दर्शन दिया और दिखाया कि सत्य को पट्टिकाओं पर स्पष्ट किया जाना चाहिए, और इससे अनेक लोग तीन स्वर्गदूतों के संदेशों के द्वारा सत्य के पक्ष में निर्णय करेंगे, जब कि पहले दो को पट्टिकाओं पर स्पष्ट किया जाएगा।”—

वह यहीं नीचे है, [1850 चार्ट के निचले बाएँ कोने की ओर संकेत करते हुए]। ठीक है? वे इसी चार्ट पर हैं, जिनके विषय में वह बात कर रही है।

—“मैंने यह भी देखा कि पत्र का प्रकाशित होना उतना ही आवश्यक था जितना दूतों का जाना; क्योंकि दूतों को अपने साथ ले जाने के लिए एक पत्र की आवश्यकता है, जिसमें वर्तमान सत्य निहित हो, ताकि वे उसे सुननेवालों के हाथों में दें, और तब सत्य मन से फीका न पड़े; और वह पत्र वहाँ भी जाएगा जहाँ दूत नहीं जा सकते। मैंने और भी बातें देखीं, जो पत्र में प्रकट होंगी।

“तुम सब आपस में कैसे निभाते हो? क्या तुम सब अनन्त जीवन के लिए प्रयत्नशील हो? मैं तुम सबसे बहुत, बहुत अधिक मिलना चाहता हूँ और सोचता हूँ कि शीघ्र ही मिलूँगा। अब तैयारी का समय है और मुझे आशा है कि हम सब अनन्तकाल के लिए अपना कार्य निश्चयपूर्वक सिद्ध करेंगे। समय बहुत अल्प प्रतीत होता है, और जो कुछ हमें करना है, उसे हमें शीघ्र करना चाहिए। ”

“20 नवम्बर, एक सप्ताह पूर्व, भाई हेनरी निकोल्स और मैं टॉपशम गए। गुरुवार [21 नवम्बर] को हम अभी भोजन की मेज से उठे ही थे कि भाई फोए के बच्चों में से एक भीतर आया और कहा कि उनकी माता अचेत हैं। हम शीघ्रता से नदी पार एक मील गए और अपनी प्रिय बहन फोए को मृत्युशय्या पर पाया। जब मैंने देखा कि वह मुझे पहचान नहीं रही थीं, तो मेरा शोक अत्यन्त बढ़ गया। वह तीन और चार बजे के बीच तक बड़े कष्ट में पड़ी रहीं, और तब उन्होंने अन्तिम श्वास ली। वह अपने पीछे एक पति और तीन बच्चे छोड़ गई हैं, जो अपनी इस क्षति पर शोक मनाएँगे।”

“शुक्रवार प्रातः [22 नव०], भाई हेनरी, अंतिम संस्कार में जाने के लिए जेम्स से दाढ़ी बनवाने पेरिस आए। हमारे लिए वह समय अत्यन्त गंभीर और हृदयस्पर्शी रहा। प्रभु ने हमें नहीं छोड़ा, वरन् अपने आत्मा को हम पर ठहरने दिया। बहन फोई के अंतिम दिन निस्संदेह उनके सबसे अधिक आत्मिक और सर्वोत्तम दिन थे। भाई फोई के लिए इसमें यह सांत्वना है कि वह एक मसीही होकर मरीं। वह अच्छी रीति से धैर्य धारण किए हुए हैं। परमेश्वर उन्हें इस क्लेश को सहने के लिए अनुग्रह देता है। ओह, परमेश्वर में ऐसी आशा रखना कितना उत्तम है, जो परीक्षा और क्लेश के हर दृश्य में संभाले रखे। ऐसी आशा के लिए, एक उत्तम आशा के लिए, परमेश्वर की स्तुति हो। तुम में से कोई भी, अपनी आशा के लिए क्या न दे?”

“विश्वास को दृढ़ता से थामे रहो। परमेश्वर में दृढ़ बनो और उसकी अनन्त भुजा पर आश्रित रहो। वह तुम्हें कभी निराश नहीं करेगी, वरन् प्रत्येक क्लेश में तुम्हें संभाले रहेगी। मेरी आशा है कि तुम सब सत्य में निरन्तर अधिक दृढ़ होते जाओ। डगमगाओ मत, परन्तु राज्य की ओर अपना मार्ग बनाते हुए आगे बढ़ो।”—

अब हम आगे बढ़ते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप यह देखें।

—“एक सप्ताह पूर्व, पिछले सब्त के दिन, हमारी एक अत्यन्त रोचक सभा हुई। डेड रिवर से भाई हेवित वहाँ थे। वे एक ऐसे संदेश के साथ आए थे, जिसका आशय यह था कि दुष्टों का विनाश और मरे हुआओं की नींद, बन्द द्वार के भीतर एक घुणित बात थी, जिसे एक स्त्री ईज़ेबेल, जो एक भविष्यद्वक्त्री थी, भीतर ले आई थी; और वह विश्वास करता था कि वह स्त्री, ईज़ेबेल, मैं ही थी।”—

ठीक है? भाई Hewit कह रहे हैं कि Ellen White, Jezebel है और उसने तीन त्रुटियाँ प्रस्तुत की हैं।

—“हमने उसे अतीत में उसकी कुछ भूलों के विषय में बताया, कि 1335 दिन समाप्त हो चुके थे, और उसकी अनेक अन्य भूलों के विषय में भी। इसका बहुत ही थोड़ा प्रभाव हुआ। उसकी अंधकारमय दशा सभा पर अनुभव की गई और सभा बोझिल होकर खिंचती रही।”

अब, मैं चाहता हूँ कि आप इस पर ध्यान दें। इस अनुच्छेद के विषय में मुझे कुछ कहना है, जिसे मैं चाहता हूँ कि यदि आप कर सकें, तो आप अनुसरण करें।

यदि आपने कभी ऐडवेंटिज़्म के भीतर उन लोगों से व्यवहार किया है जो संसार के अंत में समय-संबंधी भविष्यवाणियों को पुनः लागू करते हैं, तो उनके पास केवल तीन उद्धरण हैं जिनका वे उपयोग करते हैं—वे बहुत-से उद्धरणों का उपयोग करते हैं, परन्तु उनके पास तीन मुख्य उद्धरण हैं जिनका वे उपयोग करते हैं। यह उनमें से एक है; क्योंकि वे वहाँ जाकर कहेंगे, “हमने उसे उसकी कुछ पूर्व त्रुटियों के विषय में बताया,” और वे यह दावा करेंगे कि जब वह कहती है, “कि 1335 दिन समाप्त हो चुके थे,” तो वह उसकी उन त्रुटियों में से एक थी। क्या आप देखते हैं कि आप उस व्याकरण को किस प्रकार कुछ हद तक मोड़ सकते हैं: “हमने उसे उसकी कुछ पूर्व त्रुटियों के विषय में बताया”? हमने उसे यह भी बताया कि 1335 दिन समाप्त हो चुके थे; परन्तु समय-निर्धारक कहते हैं, हमने उसे उसकी कुछ पूर्व त्रुटियों के विषय में बताया, और उन त्रुटियों में से एक यह थी कि तुम यह सिखा रहे हो कि 1335 दिन समाप्त हो चुके हैं, और यह एक त्रुटि है।” अतः, आप इसे किसी भी प्रकार मोड़ सकते हैं।

पहली बार जब मेरा यूजीन प्रुइट के साथ आमने-सामने सामना हुआ, वह ओक्लाहोमा में था, और वह यह तर्क कर रहा है कि मिलेराइट इतिहास जगत के अंत में पुनः नहीं दोहराया जाता; और मैं उसे भविष्यद्वक्त्री की आत्मा से कुछ उद्धरण देता हूँ।

और वह कहता है, “जेफ़, तुम जानते हो कि एलेन व्हाइट एक लापरवाह लेखिका थीं।”

और मैंने कहा, “तुम्हारा क्या अभिप्राय है?”

और वह इस उद्धरण पर गया। वह कहता है कि यह उद्धरण सिद्ध करता है कि वह एक असावधान लेखिका है; क्योंकि वह जानती है कि मैं जानता हूँ कि समय-निर्धारक, यदि वे चाहें, तो इस उद्धरण को तोड़-मरोड़ सकते हैं।

अब, यह तथ्य कि Washita जैसा कोई स्थान ऐसा प्रभाव रखता है जो अपने विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि Ellen White एक असावधान लेखिका हैं, एक बात है; परन्तु, क्या यहाँ भी वह एक असावधान लेखिका हैं?

—“मैंने अनुभव किया कि मुझे कुछ शब्द अवश्य कहने चाहिए। यीशु के नाम में मैं उठ खड़ी हुई, और लगभग पाँच मिनट में सभा का रूप बदल गया। उसी क्षण सब ने उसे अनुभव किया। प्रत्येक मुखमंडल आलोकित हो उठा। परमेश्वर की उपस्थिति ने उस स्थान को भर दिया। भाई Hewit घुटनों के बल गिर पड़ा और रोने तथा प्रार्थना करने लगा। मैं दर्शन में ले ली गई और बहुत कुछ देखा जिसे मैं लिख नहीं सकती। इसका भाई Hewit पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने स्वीकार किया कि यह परमेश्वर की ओर से था और वह धूल में दीन हो गया। वह उस सभा के बाद से निरंतर लिखता रहा है, और अब उसी मेज़ से लिख रहा है, अपनी उन सब त्रुटियों का परित्याग करते हुए जिन्हें उसने प्रतिपादित किया था। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर उसे ऊपर उठा रहा है, और यदि परमेश्वर उसके द्वारा कार्य करे, तो

वह भलाई करने के लिए योग्य ठहरेगा।”

प्रिय बहन गोरहम को बहुत सारा प्रेम। उससे कहो कि दृढ़ बनी रहे। परमेश्वर उसके साथ है और वह उसे न छोड़ेगा। तुम सबको बहुत सारा प्रेम। मुझे आशा है कि बच्चे ऊँघने न लगे, वरन् सत्य में रुचि रखें और अपने बुलाहट और चुने जाने को दृढ़ करने में परिश्रमी हों। लिखो, अवश्य लिखो, और वैसा न करो जैसा मैंने किया है। मैं तुम सबसे प्रेम करती हूँ, तुम सब से। लिखो।” Manuscript Releases, volume 16, 206–209. पेरिस, मेन से लिखा गया, 27 नवंबर, 1850।

भाइयो और बहनो, इसका ऐतिहासिक संदर्भ क्या है; वह यह कहाँ लिख रही है? वह इसे 1850 में, भाई निकोल्स के घर में लिख रही है।

इस समयावधि में प्रभु क्या कर रहे हैं? वह यह दिखा रहे हैं कि “Daily” के विषय में अग्रदूतों का दृष्टिकोण सही है, और वह उसी से निपट रही है। वह कह रही है कि मसीह की पवित्रस्थान-सेवा “Daily” के विषय में मिथ्या दृष्टिकोण है।

इस इतिहास में, इसी इतिहास में—केवल यही इतिहास ही नहीं और केवल वही वर्ष ही नहीं, वरन् उसी वर्ष के उसी महीने में—उसे दर्शन प्राप्त हो रहे हैं, और वह “डेली” के अग्रदूत-स्थापन से संबंधित इस सत्य को स्पष्ट कर रही है, यह कहते हुए कि जिन्होंने न्याय-घड़ी की पुकार दी थी, उनके पास “डेली” के विषय में सही दृष्टिकोण था; और उसी अनुच्छेद में वह कहती है, “मैंने देखा कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित था और उसमें परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए, और जिन्होंने न्याय-घड़ी की पुकार दी थी, उनके पास ‘डेली’ के विषय में सही दृष्टिकोण था।”

और 1843 के इस चार्ट पर “Daily” के विषय में क्या कहा गया है? भला, यह कहता है कि उसे AD508 में हटा लिया गया था; और 1335 वर्ष बाद वह आपको 1843 तक ले आता है, और यह कि 1335 अतीत में है।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि ठीक उसी महीने, ठीक उसी वर्ष, वह डेड रिवर के भाई हेविट से कहती कि वह अब भी भविष्य की बात थी?

ठीक है, ये समय-निर्धारक, ये समय-निर्धारक, और ये लोग जो मानते हैं कि सिस्टर व्हाइट एक असावधान लेखिका हैं। इतिहास इसकी पुष्टि नहीं करता।

अतः मैं चाहता हूँ कि आप यह देखें कि “डेली” के संदर्भ में एलेन व्हाइट 1335 को भी समझती थीं।

एलेन व्हाइट ने केवल “डेली” को पैगनवाद होने पर अपनी स्वीकृति की मुहर ही नहीं लगाई; वह यह समझती थीं कि उसी से 1335-वर्षीय भविष्यवाणी का आरम्भ हुआ, जो 1843 में समाप्त हुई, और उन्होंने डेड रिवर के भाई ह्यूइट के विरुद्ध सार्वजनिक रूप से उस स्थिति का समर्थन किया। क्या आप इसे देखते हैं?

और उसी महीने में, जब वह यह कह रही है कि मसीह की पवित्रस्थान-सेवा, जो केवल “नित्य” के रूप में है, केवल अंधकार और भ्रम ही लाती है; तब उसका पति, उस दर्शन के प्रत्युत्तर में, उस शिक्षा को Review and Herald से हटा देता है।

आपके नोट्स में यहाँ ऊपर, जहाँ “1850 Chart” लिखा है, वहाँ ठीक यही लिखा है [1850 Chart में बाईं ओर से तीसरे स्तंभ की ओर संकेत करते हुए, AD31 में क्रूस पर यीशु के बाद का पाठ]। मैं चाहता था कि आप इसे अपने नोट्स में रख सकें।

दूर दानियेल 11:31 508

और फिर यहाँ 1843 के चार्ट पर [AD31 में क्रूस पर यीशु के नीचे, मध्य स्तंभ की ओर संकेत करते हुए]:

नित्य बलिदान का हटा लिया जाना। दानि. 12:11, 12

ठीक है, ये ये दो चार्ट हैं।

सिस्टर व्हाइट ने समझ लिया था कि इन पुरुषों का दृष्टिकोण सही था, और वह यह भी समझती थीं कि इसी से 1335-वर्षीय भविष्यवाणी का आरम्भ हुआ, जो 1843 में समाप्त हुई; और वह यह भी समझती थीं कि यह 508 में मूर्तिपूजक प्रभुत्व के हटा दिए जाने का प्रतिनिधित्व करता था।

इन दो चार्टों के इन दो संदर्भों के अंतर्गत आपके पास भाई निकोल्स की समय-अवधि का एक और उद्धरण है, और उसमें वह लोगों को अन्य चार्ट बनाने के लिए इसलिए ताड़ना देती है क्योंकि उनकी कलाकृति शैतानी है; जबकि वह कहती है कि इन दो चार्टों पर की गई कलाकृति स्वर्गीय है। वह कहती है,

“मैंने देखा कि चार्ट बनाने का कार्य सर्वथा गलत था। उसका आरम्भ भाई Rhodes ने किया, और उसके पश्चात भाई Case ने उसे आगे बढ़ाया। चार्ट बनाने तथा स्वर्गदूतों और महिमामय यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिए भद्दी, घृणास्पद आकृतियाँ गढ़ने में साधन व्यय किए गए हैं। मैंने देखा कि ऐसी बातें परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाली थीं। मैंने देखा कि भाई Nichols द्वारा उस चार्ट के प्रकाशन में परमेश्वर था।” —

इस 1850 के चार्ट के प्रकाशन में कौन था? परमेश्वर!

—“मैंने देखा कि वहाँ” —क्या?—“बाइबल में इस चार्ट की एक भविष्यवाणी थी, और यदि यह चार्ट परमेश्वर की प्रजा के लिए अभिकल्पित है, यदि यह एक के लिए पर्याप्त है तो दूसरे के लिए भी है, और यदि किसी एक को बड़े पैमाने पर चित्रित एक नए चार्ट की आवश्यकता थी, तो सबको उतनी ही आवश्यकता है।”

“मैंने देखा कि भाई केस में एक बेचैन, व्याकुल, असंतुष्ट, अकृतज्ञ भावना थी, जो एक और चार्ट की इच्छा कर रही थी। मैंने देखा कि इन चित्रित चार्टों का मंडली पर बुरा प्रभाव पड़ा। इसके कारण सभा में उपहास की एक हल्की, छिछली भावना उत्पन्न हो गई थी।”

अब, मैं चाहता हूँ कि आप इसी पर मनन करें।

—“मैंने देखा कि परमेश्वर द्वारा निर्देशित चार्ट, बिना किसी व्याख्या के भी, मन पर अनुकूल प्रभाव डालते थे।” —

“मैंने देखा कि वे चार्ट,” बहुवचन में, “परमेश्वर द्वारा ठहराए गए थे” कौन-से चार्ट, बहुवचन में, परमेश्वर द्वारा ठहराए गए थे? ये दो चार्ट [1843 और 1850 के चार्ट] परमेश्वर द्वारा ठहराए गए थे।

ये दोनों चार्ट हबक्कुक 2 की एक पूर्ति हैं।

—“चार्टों पर स्वर्गदूतों के चित्रण में कुछ ऐसा हलका, मनोहर, और स्वर्गीय है। मन लगभग अगोचर रीति से परमेश्वर और स्वर्ग की ओर ले जाया जाता है। परन्तु वे अन्य चार्ट जो तैयार किए गए हैं, मन में घृणा उत्पन्न करते हैं, और मन को स्वर्ग की अपेक्षा पृथ्वी पर अधिक लगाए रखते हैं। स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करने वाले चित्र स्वर्गीय प्राणियों से अधिक दुष्टात्माओं के समान दिखाई देते हैं। मैंने देखा कि वे चार्ट कई दिनों और सप्ताहों तक भाई केस के मन को घेरे रहे, जबकि उसे परमेश्वर से स्वर्गीय बुद्धि की खोज करनी चाहिए थी, और आत्मा के अनुग्रहों तथा सत्य के ज्ञान में बढ़ना चाहिए था।”

“मैंने देखा कि यदि वे साधन जो चार्ट निकालने में व्यर्थ किए गए हैं, उन्हें पुस्तिकाएँ आदि प्रकाशित करके भाइयों के सामने सत्य को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में लगाया गया होता, तो उससे बहुत भलाई होती और आत्माएँ बचाई जातीं। मैंने देखा कि चार्ट-निर्माण का काम ज्वर के समान फैल गया है।” Manuscript Releases, number 13, 359; 1853.

1290 और 1335 दिन

मेरे पास Review and Herald, 28 जनवरी, 1858 का निम्नलिखित लेख है। मैंने इसे आपके नोट्स में इसलिए रखा है क्योंकि आप देख सकते हैं कि 1858 में वे अब भी यह शिक्षा दे रहे हैं कि "the Daily" बुतपरस्ती है। यह आपके संदर्भ में है; 1850 के आठ वर्ष बाद भी वे अब भी यह समझते हैं कि "the Daily" बुतपरस्ती है।

"एक और महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणी-संबंधी काल, जिस पर एडवेंट सिद्धांत आधारित है, दानिय्येल 12 के 1335 दिनों का है, जिसके साथ 1290 दिन इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। ये दोनों काल हमें इस प्रकार प्रस्तुत किए गए हैं:"

"—और जिस समय से नित्य (बलिदान) हटा दिया जाएगा, और वह उजाड़ने वाली घृणित वस्तु स्थापित की जाएगी, उस समय से एक हज़ार दो सौ नब्बे दिन होंगे। धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है और एक हज़ार तीन सौ पैंतीस दिनों तक पहुँचता है। परन्तु तू अन्त तक अपनी बाट लिए चला जा; क्योंकि तू विश्राम करेगा और दिनों के अन्त में अपने भाग पर खड़ा होगा।" दानिय्येल 12:11-13।

"प्रश्न तत्काल उठते हैं, क्या हम बता सकते हैं कि वे कौन-सी घटनाएँ हैं जिनसे इन अवधियों की गणना की जानी है; और यदि हाँ, तो क्या हम बता सकते हैं कि वे कब घटीं? हम पहले यह पूछते हैं, 'नित्य' (बलिदान) क्या है, और 'वह घृणित वस्तु जो उजाड़ कर देती है' क्या है? यह ध्यान दिया जाएगा कि 'बलिदान' शब्द तिरछे अक्षरों में है: जो यह सूचित करता है कि वह जोड़ा हुआ शब्द है। यही बात दानिय्येल की पुस्तक में इसके अन्य प्रयोगों में भी देखी जाएगी, अर्थात् अध्याय 11:31 और 8:11-13 में। आइए, संक्षेप में इस अंतिम अध्याय की ओर ध्यान दें। पद 13 में यह देखा जाएगा कि दो प्रकार के उजाड़े जाने का उल्लेख किया गया है; 'नित्य' (उजाड़), और 'उजाड़ करने वाला अपराध'। इस तथ्य को जोसाया लिच ने इतना स्पष्ट कर दिया है कि हम उसके शब्द उद्धृत करने से बेहतर कुछ नहीं कर सकते:*

"—'प्रतिदिन का बलिदान' पाठ का वर्तमान रूप है; परन्तु मूल पाठ में 'बलिदान' जैसी कोई बात नहीं पाई जाती। यह बात सर्वत्र स्वीकार की जाती है। यह अनुवादकों द्वारा उस पर आरोपित एक व्याख्यात्मक पाठ या अर्थ-निर्माण है। सही पाठ यह है, 'प्रतिदिन का और उजाड़ने वाले अपराध का;' यहाँ 'प्रतिदिन' और 'अपराध' 'और' द्वारा परस्पर जुड़े हुए हैं—प्रतिदिन का उजाड़ना और उजाड़ने वाले अपराध का। ये दो उजाड़ने वाली शक्तियाँ थीं, जिन्हें पवित्रस्थान और सेना को उजाड़ना था।"

इससे यह स्पष्ट है कि "दैनिक" का किसी भी प्रकार से यहूदी उपासना से कोई संबंध नहीं हो सकता, जिसके साथ उसे प्राचीन और अधिक प्रचलित मत के अनुसार जोड़ा गया है; और यह बात इस विचार से और भी स्पष्ट हो जाती है कि यदि इन अवधियों की गणना, चाहे उन्हें शाब्दिक रूप से लिया जाए या आलंकारिक रूप से, इस उपासना के किसी भी हटाए जाने के समय से की जाए, तो वे हमें किसी भी ऐसी घटना तक नहीं पहुँचातीं जो किसी प्रकार उल्लेखनीय हो।

"तब 'नित्य' और 'घृणित वस्तु'—ये दो उजाड़ने वाली शक्तियाँ हैं, जो कलीसिया पर अत्याचार करने वाली थीं: क्या हम निश्चित कर सकते हैं कि ये शक्तियाँ कौन-सी हैं? इस विषय में हमें केवल विलियम मिलर की तर्क-पद्धति को अपनाना है, ताकि हम भी उसी निष्कर्ष पर पहुँचें जिस पर वह पहुँचा। वह कहता है:"

"—मैं आगे पढ़ता गया, और मुझे कोई दूसरा ऐसा उदाहरण न मिला जिसमें [नित्य] पाया जाता हो, केवल दानिय्येल में। तब मैंने [एक सहसंबद्ध शब्द-सूची की सहायता से] उन शब्दों को लिया जो उसके साथ जुड़े हुए थे,—'हटा देना'; 'वह नित्य को हटा देगा'; 'उस समय से जब नित्य हटा दिया जाएगा'; आदि। मैं आगे पढ़ता गया और सोचता रहा कि इस पाठ पर मुझे कोई प्रकाश न मिलेगा। अंत में मैं 2 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8 पर पहुँचा,—'क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य कर रहा है; केवल वह जो अब रोकता है, तब तक रोके रहेगा, जब तक वह मार्ग से हटा न दिया जाए, और तब वह दुष्ट प्रगट होगा।' आदि। और जब मैं उस पाठ तक पहुँचा, ओ,

सत्य कितना स्पष्ट और महिमामय दिखाई दिया! वह रहा! वही है—'नित्य!' अच्छा, अब पौलुस का 'वह जो अब रोकता है' या बाधा देता है, से क्या अभिप्राय है? 'पाप का मनुष्य' और 'दुष्ट' से पोपतंत्र अभिप्रेत है। अच्छा, फिर वह क्या है जो पोपतंत्र के प्रगट होने में बाधा देता है? वह है मूर्तिपूजक धर्म। तो फिर, 'नित्य' का अर्थ मूर्तिपूजक धर्म ही होना चाहिए।'+ "

हम दानिय्येल 8 से देखते हैं कि वही छोटा सींग, जो बकरे, अर्थात् यूनानी साम्राज्य, के पश्चात् उत्पन्न हुआ, —नित्य' को हटा देता है; और सिकन्दर के राज्य के विभाजन के बाद से लेकर उस समय तक, जब 2300 दिनों के अंत में पवित्रस्थान शुद्ध किया जाना था, दृष्टिगोचर की गई शक्तियों में वही एकमात्र शक्ति है। इस छोटे सींग को हमने उसके उचित स्थान में यह दिखाया है कि वह एक इकाई के रूप में लिया गया रोम है, जो दानिय्येल के अन्य दर्शनों के चौथे राज्य के अनुरूप है। अब यह एक तथ्य है कि रोमी सत्ता में मूर्तिपूजक धर्म से पोपसत्ता तक एक परिवर्तन वास्तव में हुआ। अशूर के राजाओं के दिनों से लेकर पोपवाद में उसके रूपांतरण के समय तक, मूर्तिपूजक धर्म ही वह नित्य था, या जैसा प्रोफेसर व्हाइटिंग उसका अनुवाद करते हैं, —वह निरंतर' उजाड़नेवाली शक्ति, जिसके द्वारा शैतान यहोवा के कार्य के विरुद्ध खड़ा रहा। उसके पुरोहितों, उसकी वेदियों और उसके बलिदानों में यहोवा की उपासना की लेवीय व्यवस्था के साथ साम्य था; परन्तु जब लेवीय व्यवस्था ने उपासना की मसीही रीति को स्थान दिया, तब शैतान को, उस कार्य का सफलतापूर्वक विरोध करने के लिए, अपने विरोध के स्वरूप को भी बदलना पड़ा; अतः मूर्तिपूजक धर्म के मन्दिर, वेदियाँ और प्रतिमाएँ पोपवाद की निन्दात्मकताओं में बपतिस्मा दे दी गई।

"परन्तु यह कहा गया है कि भविष्यवाणी में प्रतिदिन, अर्थात् बुतपरस्ती, का एक पवित्रस्थान था, और उसके पवित्रस्थान का स्थान गिरा दिया जाना था। यह कि पवित्रस्थान का सम्बन्ध प्रायः मूर्तिपूजा और अन्यजातीय धर्म से, उसकी भक्ति और उपासना के स्थान के रूप में, जोड़ा जाता है, निम्नलिखित धर्मशास्त्रीय वचनों से स्पष्ट है: यशायाह 16:12; आमोस 7:9, 13, हाशिया। यहजेकल 28:18। दानिय्येल 8 के प्रतिदिन के पवित्रस्थान के विषय में, हम अपोल्लोस हेल से निम्नलिखित प्रस्तुत करते हैं:*

"—मूर्तिपूजकता का —पवित्रस्थान' किस अर्थ में समझा जाए? मूर्तिपूजकता, और हर प्रकार की भ्रांति, सत्य के समान अपने-अपने पवित्रस्थान रखती हैं। ये वे मंदिर या आश्रय-स्थान हैं जो उनकी सेवा के लिए समर्पित किए गए हैं। अतः यह माना जा सकता है कि यहाँ मूर्तिपूजकता के किसी विशेष और प्रसिद्ध मंदिर की ही चर्चा की गई है। उसके अनेक विख्यात मंदिरों में से वह कौन-सा हो सकता है? शास्त्रीय वास्तुकला के अत्यंत भव्य नमूनों में से एक को पैथियन कहा जाता है। उसके नाम का अर्थ है —सभी देवताओं का मंदिर या आश्रय-स्थान।' उसका स्थान रोम है।+ रोमियों द्वारा विजित जातियों की मूर्तियाँ आदरपूर्वक इस मंदिर के किसी कोटर या विभाग में रख दी जाती थीं, और बहुत-से मामलों में वे स्वयं रोमियों के द्वारा भी उपासना की वस्तु बन जाती थीं। क्या हम मूर्तिपूजकता का ऐसा कोई मंदिर खोज सकते हैं जो —उसके पवित्रस्थान' के रूप में इससे अधिक स्पष्ट रूप से उपयुक्त ठहरे?"

अब यह निश्चित कर लेने पर कि "नित्य" बुतपरस्ती है, और "उजाड़ करने वाला अपराध", अथवा—“वह घृणित वस्तु जो उजाड़ करती है,” पोपसत्ता है, और यह कि बुतपरस्ती का विशेष पवित्रस्थान पैथियन था, तथा उसके स्थित होने का "स्थान" रोम था, हम आगे पूछताछ करते हैं।

"1. क्या रोमी नागरिक सत्ता द्वारा मूर्तिपूजक धर्म को —'हटा लिया गया' था? कलीसिया और संसार के इतिहास की एक महत्वपूर्ण और सुप्रसिद्ध घटना के संबंध में निम्नलिखित कथन, हमारा विचार है, इस भविष्यवाणी का उत्तर देता है। यह प्रथम मसीही सम्राट कॉन्स्टैन्टाइन का उल्लेख करता है, और कहता है:"

"—उसके शासन का प्रथम कार्य समस्त साम्राज्य में एक राजाज्ञा प्रेषित करना था, जिसमें उसकी प्रजा को मसीही धर्म ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था।"

"2. क्या रोम उसका पवित्रस्थान का नगर या स्थान था, (पैथियन,) जिसे राज्य के अधिकार द्वारा गिरा दिया गया? निम्नलिखित उद्धरण इसका उत्तर देता है:"

“—कॉन्स्टैन्टाइन के अंतिम प्रतिद्वन्द्वी की मृत्यु ने साम्राज्य की शान्ति पर मुहर लगा दी थी। रोम एक बार फिर निर्विवाद रूप से जातियों की रानी थी। परन्तु, उत्थान और वैभव की उसी घड़ी में, वह एक प्रपात के किनारे तक उठा दी गई थी। उसका अगला कदम नीचे की ओर और अपरिवर्तनीय होने वाला था। शासन को कॉन्स्टैन्टिनोपल में स्थानान्तरित कर देने की घटना आज भी इतिहासकार को उलझन में डालती है। यह ऐसा कार्य था जो रोमन मनोवृत्ति की समस्त प्राचीन और सम्माननीय पूर्वधारणाओं की धारा के प्रत्यक्ष प्रतिकूल था। यह किसी विलासप्रिय एशियाई का कार्य नहीं था, जो पूर्वी रीति-रिवाजों और जलवायु के भोग-विलासों में लिप्त हो, बल्कि एक लौह-विजेता का था, जो पश्चिम में जन्मा था, और जो सब रोमनों की भाँति प्राच्यवादियों की आदतों के प्रति तिरस्कारभाव रखता था; यह एक तीक्ष्ण राजनीतिज्ञ का कार्य था, तथापि वह अत्यन्त प्रत्यक्ष रूप में अविवेकपूर्ण था। फिर भी कॉन्स्टैन्टाइन ने रोम, कैसरों के उस महान दुर्ग और सिंहासन, को छोड़कर ग्रेस के एक अज्ञात कोने को अपना लिया, और अपने शेष प्रबल तथा महत्वाकांक्षी जीवन को इस दोहरे श्रम में व्यय कर दिया कि एक उपनिवेश को अपने साम्राज्य की राजधानी में उन्नत करे, और राजधानी को एक उपनिवेश के निर्बल सम्मानों और अपमानित सामर्थ्य तक गिरा दे।”*

इतिहासकार की लेखनी से प्राप्त यह अभिलेख इतना स्पष्ट है कि उस पर किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। भविष्यवाणी कहती है, “उसके पवित्रस्थान का स्थान गिरा दिया गया”; और उपर्युक्त जैसे तथ्यों के कथन के पश्चात्, भविष्यवाणी की व्याख्या में अत्यन्त सूक्ष्मता बरतने वाला भी इसके अनुप्रयोग के विषय में संतुष्ट हो जाना चाहिए।

“और जिस समय से नित्य हटा दिया जाएगा, और उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु स्थापित की जाएगी, उस समय से एक हजार दो सौ नब्बे दिन होंगे। धन्य है वह, जो प्रतीक्षा करता है और एक हजार तीन सौ पैंतीस दिनों तक पहुँचता है। हमारे सम्मुख ये तथ्य हैं कि ‘नित्य’ बुतपरस्ती है, कि उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु पोपतंत्र है, कि रोमी सामर्थ्य में पहले से बाद वाले तक परिवर्तन हुआ, और वह राज्य के अधिकार द्वारा हुआ; अतः हमें केवल यह और जाँच करना है कि यह किस समय ऐसी रीति से हुआ जिससे यह भविष्यवाणी पूरी हो; क्योंकि यदि हम यह निश्चित कर सकें, तो हमारे सम्मुख दिए गए पाठ में भविष्यसूचक अवधियों की तिथि-गणना के लिए हमारे पास वह आरम्भ-बिन्दु होगा। इसलिए,”

“3. भविष्यवाणी में उल्लिखित घटना कब घटित हुई? यह ध्यान दिया जाए कि प्रश्न यह नहीं है कि पवित्र जनों को पोपतंत्र के हाथ में कब सौंपा गया, बल्कि यह है कि धर्म का परिवर्तन मूर्तिपूजकता से पोपतंत्र में इतनी सीमा तक कब संपन्न हुआ कि बाद वाला राष्ट्रीय धर्म बन गया, और अपनी यात्रा आरम्भ करने की स्थिति में आ गया। यह, अन्य सभी महान क्रान्तियों के समान, एक क्षण का कार्य नहीं था। इसके आरम्भिक प्रभाव बहुत पहले ही प्रकट हो चुके थे। पौलुस ने कहा कि उसके दिनों में भी अधर्म का भेद, पाप का मनुष्य, ‘वह घृणित वस्तु जो उजाड़ करती है,’ पहले से ही कार्य कर रही थी। और इसी पवित्रशास्त्रीय वचन के प्रकाश में हमें मत्ती 24:15 में हमारे प्रभु के उन शब्दों को समझना चाहिए, जो उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु के विषय में हैं, जहाँ वह स्पष्ट रूप से दानियेल 9:27 का संकेत करता है। क्योंकि यद्यपि सन् 70 में, जब यरूशलेम रोमियों द्वारा नष्ट किया गया, मूर्तिपूजकता ने अभी तक पोपतंत्र के लिए स्थान नहीं छोड़ा था, तौभी हम यह समझते हैं कि वह शक्ति, जो उस समय कुछ नाम और रूप में परिवर्तित होकर प्रकट हुई, वही शक्ति थी जो उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु के रूप में पवित्र जनों को क्षीण करेगी और परमप्रधान की कलीसिया को उजाड़ देगी।”

496 में घटित फ्रांस के राजा क्लोविस के धर्म-परिवर्तन के समय तक, फ्रांसीसी और पश्चिमी रोम की अन्य जातियाँ मूर्तिपूजक थीं; परन्तु उस घटना के पश्चात् मसीह के प्रति मूर्तिपूजकों को परिवर्तित करने के प्रयत्नों को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। कहा जाता है कि क्लोविस के धर्म-परिवर्तन के परिणामस्वरूप फ्रांसीसी सम्राट को “परम ख्रीस्तीय महामहिम” और “कलीसिया का ज्येष्ठ पुत्र” जैसी उपाधियों से संबोधित करने की प्रथा प्रारम्भ हुई।+ उस समय और ईस्वी सन् 508 के बीच “संधियों,” “समर्पण-पत्रों” और विजयों के द्वारा, “अव्बोरिकी,” “पश्चिम में रोमी सैनिक चौकियाँ,” ब्रिटनी, बर्गंडियन और विसिगोथ अधीनता में ले आए गए।”++

—पश्चिमी रोमी साम्राज्य में मूर्तिपूजकता ने, यद्यपि निस्संदेह उसने मसीही विश्वास की प्रगति को अवरुद्ध किया, विशेषकर उन राष्ट्रों में जो, जैसे इंग्लैंड के मामले में, उन बर्बर कुलों के आक्रमणों से पीड़ित थे जो अब भी मूर्तिपूजक

बने रहे, फिर भी इसके बाद उसमें, यदि उसमें कैथोलिक विश्वास को दबाने अथवा रोमी परमाध्यक्ष के अतिक्रमणों को रोकने की प्रवृत्ति थी भी, तो ऐसा करने की शक्ति नहीं रही।

उस समय से, जहाँ तक पगानवाद का संबंध था, पोपीय घृणितता विजयी हो गई थी। उसके भावी संघर्ष अन्य मसीही पंथों के साथ थे, जिन्हें सदा विधर्मी माना जाता था; और राजकुमारों के साथ, जिन्हें सदा विद्रोही या मसीह की देह के विभाजक माना जाता था। यूरोप की प्रमुख शक्तियों ने पगानवाद के प्रति अपनी आसक्ति केवल इस उद्देश्य से त्याग दी कि उसकी घृणितताओं को दूसरे रूप में स्थायी बनाए रखें; क्योंकि पगानवाद को कैथोलिक अर्थ में मसीही बनने के लिए केवल बपतिस्मा लिया जाना ही आवश्यक था; और जब उसके अध्यक्षीय सेवक के स्वार्थ या प्रतिशोध की माँग होती, तब उनकी संपत्तियाँ और सिंहासन,—और संभवतः उनके प्राण भी,—वेदी पर चढ़ा दिए जाने चाहिए थे।

SS

* भविष्यद्वाणी का विवेचन, खंड 1, 127.

+ गुडरिच की यूनिवर्सल हिस्ट. तथा गुथरी की जिओग.।

+ मोसहाइम, क्रिश्चियन हिस्ट्री, खंड 1, 132, 133.

इंग्लैंड में, प्रथम मसीही राजा आर्थर ने पगान धर्म के खंडहरों पर मसीही उपासना की स्थापना की।* रैपिन, जो अपने इतिहास में घटनाओं के कालक्रम के विषय में अधिक शुद्ध होने का दावा करता है, यह कहता है कि वह 508 में ब्रिटेन का सम्राट निर्वाचित किया गया। पुस्तक 2, 129.

उस समय रोम के आसन की क्या स्थिति थी? — सिम्माकुस 498 या 499 से 514 तक पोप था। उसका पोपत्व इन उल्लेखनीय परिस्थितियों और घटनाओं से विशिष्ट था:

"1. जब वह 'रोम की कलीसिया' में प्रवेश किया, तब उसने 'मूर्तिपूजा का परित्याग किया।"

"2. उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी के साथ यहाँ तक कि रक्तपात तक संघर्ष करके पोपीय सिंहासन तक अपना मार्ग बनाया। डू पिन।

"3. उसे संत पतरस के उत्तराधिकारी के रूप में दी जाने वाली स्तुति-प्रशंसा के द्वारा।"

"4. सम्राट अनास्तासियुस के बहिष्कार द्वारा।+"

"—कितना," मोशाइम कहता है, "कुछ लोगों के मत रोमी पोंटिफों की प्रभुत्वपूर्ण माँगों के अनुकूल थे, इसका सहज ही अनुमान एन्नोडियस के एक कथन से लगाया जा सकता है—वह सिम्माकुस का वह कुख्यात और उच्छृंखल चाटुकार था, जो संदिग्ध प्रतिष्ठा वाला एक धर्माध्यक्ष था। इस परजीवी प्रशंसक ने, अन्य निरर्थक दावों के साथ, यह प्रतिपादित किया कि पोंटिफ को परमेश्वर के स्थान पर न्यायी ठहराया गया था, जिसे वह परमप्रधान के प्रतिनिधि के रूप में भरता था।"++

पश्चिम में कैथोलिक उद्देश्य को प्राप्त हुई शक्ति, इन सफलताओं, तथा रोम की आसदी के विकारों और अन्य प्रतिनिधियों की कार्यवाही के द्वारा, कॉन्स्टैन्टिनोपल में पोपीय दल —स्थापित किया गया— ऐसी स्थिति में आ गया कि वह रोम में अपने स्वामी के पक्ष में खुली शत्रुता को उचित ठहरा सके। 508 में कट्टरता और गृहयुद्ध का बवंडर पूर्वी राजधानी की सड़कों पर आग और रक्त के साथ बह निकला।

गिब्लन, 508-514 के वर्षों के अंतर्गत, क्युस्तुन्तुनिया के उपद्रवों का वर्णन करते हुए, कहता है—सम्राट की मूर्तियाँ तोड़ दी गईं, और उसका व्यक्तित्व नगर के एक उपनगर में छिपा रहा, जब तक कि तीन दिनों के अंत में उसने अपने प्रजाजनों की दया की याचना करने का साहस न किया। [पोपवाद विजयी है।] अपने मुकुट के बिना, और एक याचक की मुद्रा में, अनास्तासियुस सर्कस के सिंहासन पर प्रकट हुआ। कैथोलिकों ने उसके सम्मुख वास्तविक त्रिसागियों

का पाठ किया; उन्होंने उस प्रस्ताव पर उल्लास प्रकट किया, जिसका उसने एक उद्घोषक की वाणी द्वारा यह घोषणा करते हुए प्रचार किया कि वह साम्राज्य-पद त्यागने को तैयार है; उन्होंने इस चेतावनी को सुना कि, चूँकि सब लोग राज्य नहीं कर सकते, इसलिए उन्हें पहले एक सार्वभौम के चयन पर सहमत हो जाना चाहिए; और उन्होंने दो अलोकप्रिय मंत्रियों के रक्त को स्वीकार किया, जिन्हें उनके स्वामी ने बिना किसी हिचकिचाहट के सिंघों के आगे डलवा देने की आज्ञा दी। ये उग्र, परंतु क्षणिक, राजद्रोह वितालियन की सफलता से प्रोत्साहित हुए, जिसने हूणों और बुल्गारियों की अपनी सेना के साथ, जो अधिकांशतः मूर्तिपूजक थे, अपने को कैथोलिक विश्वास का पक्षधर घोषित किया। इस धर्मपरायण विद्रोह में उसने थ्रेस को जनशून्य कर दिया, कुस्तुन्तुनिया की घेराबंदी की, अपने ही पैसठ हजार सह-ख्रीस्तियों का संहार कर डाला, जब तक कि उसने बिशपों की पुनर्बहाली, पोप की तुष्टि, और चाल्सिडोन की सभा की स्थापना प्राप्त न कर ली—एक रूढ़िवादी संधि, जिस पर मरते हुए अनास्तासियुस ने अनिच्छा से हस्ताक्षर किए, और जिसका पालन जस्टिनियन के चाचा ने अधिक निष्ठापूर्वक किया। और यही उस प्रथम धार्मिक युद्ध का परिणाम था, जो शान्ति के परमेश्वर के नाम पर, और उसके चेलों द्वारा, लड़ा गया था। SS

अप्पोलोस हेल के निम्नलिखित उद्धरण के साथ हम इस बिंदु पर साक्ष्य को समाप्त करते हैं: —अब हम अपने आधुनिक गमलीएलों को आमंत्रित करते हैं कि वे हमारे साथ 508 में मूर्तिपूजकता के पवित्रस्थान के स्थान पर खड़े हों (जिसे अब “सेंट पीटर की पैतृक संपत्ति” कहा जाता है)। हम कुछ वर्ष पीछे दृष्टि डालते हैं, और उत्तर के बर्बर जातियों की उग्र मूर्तिपूजकता नाममात्र के मसीही पश्चिमी रोमी साम्राज्य पर उमड़ती चली आ रही है—हर स्थान पर विजय प्राप्त करती हुई—और उसकी विजयें सर्वत्र अत्यंत क्रूर निर्दयता से चिह्नित हैं। . . . साम्राज्य गिर पड़ता है और टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है। एक-एक करके इन खंडों के प्रभु और शासक अपनी मूर्तिपूजकता का परित्याग करते हैं और मसीही विश्वास को मानने लगते हैं। धर्म के क्षेत्र में विजेता पराजितों के सामने झुक रहे हैं। परन्तु फिर भी मूर्तिपूजकता विजयी है। उसके समर्थकों में एक कठोर और सफल विजेता है। (क्लोविस।) परन्तु शीघ्र ही वह भी इस नए विश्वास की शक्ति के आगे झुक जाता है और उसका पक्षधर बन जाता है। वह अब भी विजयी है, परन्तु एक वीर और विजेता के रूप में उसी बिंदु पर, जहाँ हम खड़े हैं, अर्थात् सन् 508 में, अपने उत्कर्ष के शिखर पर पहुँचता है।

“—उसी वर्ष में या उसके निकट, पतित साम्राज्य का अंतिम महत्त्वपूर्ण उपविभाग उसके विजयी ‘सम्राट’ के राज्याभिषेक द्वारा सार्वजनिक रूप से मसीहीकृत कर दिया जाता है।”

“—जिस अवधि पर हम खड़े हैं, उसके लिए परमाध्यक्ष हाल ही में धर्मांतरित किया हुआ एक पगान है। जिस रक्तरंजित संघर्ष ने उसे उस आसन पर स्थापित किया, उसका निर्णय एक आरियन राजा के हस्तक्षेप से हुआ। उसे इस प्रकार नमन किया जाता है और अभिवादन किया जाता है मानो वह —‘पृथ्वी पर परमेश्वर का स्थान’— भर रहा हो। सीनेट इतनी सीमा तक उसके अधिकार के अधीन है कि, इस संदेह मात्र पर कि रोम के आसन के हित इसकी माँग करते हैं, वे सम्राट को बहिष्कृत कर देते हैं। . . . 508 में पूर्वी साम्राज्य के सिंहासन के नीचे सुरंग में रखा बारूद विस्फोटित किया जाता है। उससे उत्पन्न भ्रम और संघर्ष का परिणाम उसके वैध स्वामी का अपमान और अवनति होता है। अब प्रश्न यह है कि पगानवाद किस समय इस सीमा तक दबा दिया गया था कि उसके स्थानापन्न और उत्तराधिकारी, पोपीय घृणित वस्तु, के लिए स्थान बन सके? वह घृणित वस्तु कब ऐसी स्थिति में रखी गई कि वह अपनी ईशनिंदा और रक्तपात की यात्रा आरंभ कर सके? क्या पगानवाद के स्थान पर उसके “रखे” जाने, या “स्थापित” किए जाने, के लिए 508 के अतिरिक्त कोई और तिथि है? यदि वह रहस्यमयी मोहिनी अब तक अपने सब भोगों को अपने वश में नहीं लाई है, तो भी उसने अपना स्थान ग्रहण कर लिया है, और कुछ लोग उसके मोह के आगे झुक चुके हैं।”

अन्ततः अन्य सब वश में कर लिए जाते हैं,—और “राजा, और लोग, और भीड़ें, और जातियाँ, और भाषाएँ,” उस मोहिनी शक्ति के अधीन ले आए जाते हैं जो उन्हें इस बात के लिए तैयार करती है कि वे, “यीशु के शहीदों के लोहू से मतवाले” होते हुए भी, “यह समझें कि वे परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं,” और अपने आपको स्वर्ग के एकमात्र प्रियपात्र मानें, जबकि वे नरक के दण्ड के लिए और भी अधिक सहज तथा समृद्ध शिकार बनते जाते हैं*।

“हमारे पास तिथि है। ‘नित्य’ को हटा दिया गया, और उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु 508 में स्थापित की गई। इस बिंदु से गणना करने पर 1290 दिन अथवा वर्ष 1798 में समाप्त होते हैं, जहाँ, जैसा कि पहले ही दिखाया जा चुका है, बुओनापार्टे की भुजा के द्वारा पोप से उसकी नागरिक शक्ति छीन ली गई थी। 1335 दिन हमें उस घटना के इस पार पूरे 45 वर्ष आगे ले आते हैं।”

“परन्तु कुछ कह सकते हैं, आप अवधियों का अंत अतीत में कैसे ठहराते हैं? क्या यह नहीं लिखा है कि दानिय्येल विश्राम करेगा और दिनों के अंत में अपने भाग में खड़ा होगा? निश्चय ही; और हम इस पर विश्वास करते हैं। परन्तु दानिय्येल के अपने भाग में खड़े होने का क्या अर्थ है? यह विषय तब विचाराधीन होगा जब हम समय के बीत जाने की व्याख्या पर आएँगे, और उन घटनाओं की जाँच करेंगे जो वास्तव में दिनों के अंत में घटी थीं। इस बीच हम यहाँ अगले सप्ताह तक लंगर डालते हैं।” *Review and Herald*, January 28, 1858.

प्रेस्कॉट और डैनियल्स की भूलें और खतरे; जिन नगरों में कार्य किया जाना है

(ए. जी. डैनिएल्स 1901 में जनरल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष निर्वाचित किए गए थे। इससे यह संकेत मिलता है कि यह दस्तावेज़ 1910 में लिखा गया था, उस समय जब श्रीमती व्हाइट डैनिएल्स द्वारा नगरों की उपेक्षा किए जाने और “डेली” के विषय में विवाद में उनकी संलिप्तता को लेकर अत्यंत चिंतित थीं।)

अब, हाल ही में स्टीव वोल्हबर्ग कह रहे थे कि उन्हें “डेली” पर कोई पक्ष लेने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि एलेन व्हाइट ने कभी “डेली” पर कोई पक्ष नहीं लिया; और यदि भविष्यद्वक्त्री के लिए वह रुख ग्रहण करना पर्याप्त था, तो उनके लिए भी वह पर्याप्त है।

हाँ, एलेन व्हाइट का “दैनिक” के विषय में एक निश्चित मत था। उन्होंने कहा कि मिलरवादी उसके विषय में सही दृष्टिकोण रखते थे, और वह समझती थीं कि वह बुतपरस्ती थी। वह यह भी समझती थीं कि जब बुतपरस्ती हटा दी गई, तब 1335 आरम्भ हुआ; और वह यह भी समझती थीं कि उसके अतिरिक्त अन्य मत केवल अन्धकार और भ्रम ही उत्पन्न करते हैं।

और 1850 के इतिहास से जिस बात को आप यह दिखा सकते हैं कि वह वास्तव में अन्धकार और भ्रम लाने वाली एक पृथक की हुई धारणा थी, वह क्रोसियर का यह दृष्टिकोण है कि “डेली” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा का प्रतिनिधित्व करती थी; इसलिए, मेरा विचार है कि उसे यह समझ थी कि “डेली” क्या थी—केवल यह ही नहीं कि वह क्या थी, बल्कि यह भी कि वह किसका प्रतिनिधित्व करती थी—क्योंकि यदि आप उस स्थिति को छोड़ देते हैं, तो आप अन्धकार और भ्रम में चले जाते हैं।

परन्तु, 1910 में एलेन व्हाइट ने जनरल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष और डब्ल्यू. डब्ल्यू. प्रेस्कॉट को भी क्रोसियर के समान इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए फटकार लगाई।

और कोई भी इतिहासकार यह तर्क नहीं करेगा कि प्रेस्कॉट, विली व्हाइट, और ए. जी. डैनियल्स, जब वे “डेली” का समर्थन कर रहे थे, तब वे इस विचार का समर्थन कर रहे थे कि “डेली” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा का प्रतिनिधित्व करती है। यह बात सब जानते हैं।

परंतु, यहाँ आपके पास संपूर्ण लेख Manuscript Releases, volume 20 से प्रस्तुत है।

यह कब प्रकाशित किया गया था? खैर, यह 1988 में प्रकाशित किया गया था; अतः 1988 में एडवेंटिज़्म के विद्यार्थियों के विचारार्थ यह उपलब्ध है।

विली व्हाइट, प्रेस्कॉट, और डैनियल्स ने एडवेंटिज़्म में “डेली” के विषय में मिथ्या दृष्टिकोण कब स्थापित किया? 1919 से 1931 तक उन्होंने अपना कार्य पूरा किया। 1931 तक, इसे भूल जाइए!! एडवेंटिज़्म यह सिखाने जा रहा है कि “डेली” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि उन्होंने पवित्रशास्त्र की उस व्याख्या को

स्वीकार कर लिया है जो धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलिकवाद से आती है। और इस बिंदु से आगे, “डेली” की पहचान मसीह की पवित्रस्थान-सेवा के रूप में की जाती है।

अरे, कुछ स्वर ऐसे हैं जो इसका विरोध कर रहे हैं और वे बेहतर जानते हैं, परन्तु उस बिंदु के बाद से धारा पूरी तरह पलट चुकी है।

और फिर 1988 में, एलेन व्हाइट एस्टेट ने हमारे लिए 1910 का यह कथन ठीक उसी समय प्रकाशित किया, जब प्रेस्कॉट, डेनियल्स, और विली व्हाइट द्वारा “द डेली” के विषय में विवाद उत्पन्न किया जा रहा था।

हमारे अनुभव के इस चरण में, हमारे मन उस विशेष ज्योति से हटाए न जाएँ जो हमारी सभा के महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में विचार करने के लिए [हमें] दी गई थी। और वहाँ भाई डेनियल्स थे, जिनके मन पर शत्रु कार्य कर रहा था;

उसका क्या अर्थ है? इसका क्या अर्थ है कि शत्रु तुम्हारे मन पर कार्य कर रहा है? इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा तुम्हारे मन पर कार्य नहीं कर रहा है।

“...और आपके मन तथा एल्डर प्रेस्कॉट के मन पर उन स्वर्गदूतों द्वारा कार्य किया जा रहा था जिन्हें स्वर्ग से निकाल दिया गया था...”

“शैतान का कार्य यह था कि वह तुम्हारे मनो को भटका दे, ताकि ऐसी जॉट्स और टिटल्स लाई जाएँ जिन्हें लाने के लिए प्रभु ने तुम्हें प्रेरित नहीं किया। वे आवश्यक नहीं थीं। परन्तु इसका सत्य के कार्य पर बहुत प्रभाव पड़ता था। और यदि तुम्हारे मनो के विचार जॉट्स या टिटल्स की ओर खींचे जा सकें, तो यह शैतान की युक्ति का कार्य है। तुम समझते हो कि लिखी हुई पुस्तकों में छोटी-छोटी बातों को सुधारना एक बड़ा कार्य करना होगा। परन्तु मुझे यह कहने की आज्ञा दी गई है, मौन ही वाक्पटुता है।”

वे उरियाह स्मिथ की पुस्तक, *Thoughts on Daniel and Revelation*, में जाकर उस बात को निकाल देना चाहते थे जो उसने “नित्य” के विषय में यह कहकर लिखी थी कि वह बुनपरस्ती है। इसी कारण इस समयावधि में जिन पुरुषों में से एक विली व्हाइट, प्रेस्कॉट, और डैनियल्स के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है, उसका नाम लैरी स्मिथ है।

लैरी स्मिथ कौन है? वह उरियाह का पुत्र है, और वह जानता है कि वे क्या करना चाहते हैं, और वह अपने पिता के साथ खड़ा है: “दैनिक” मूर्तिपूजकता है।

मुझे कहना है, दोष निकालना बंद करो। यदि शैतान का यह उद्देश्य ही पूरा किया जा सकता, तो तुम्हें [ऐसा] प्रतीत होता [कि] तुम्हारा कार्य अपनी परिकल्पना में अत्यन्त अद्भुत माना जाता। यह शत्रु की योजना थी कि वे सभी कथित आपत्तिजनक विशेषताएँ वहाँ ले आए जहाँ सब प्रकार के मन एकमत नहीं थे।

“और फिर क्या? वही कार्य जो शैतान को प्रसन्न करता है, संपन्न हो जाएगा। बाहरी लोगों के समक्ष हमारे विश्वास का ऐसा नहीं, बल्कि ठीक वही चित्रण प्रस्तुत किया जाएगा जो उन्हें अनुकूल लगे, जिससे चरित्र के ऐसे गुण विकसित होंगे जो”

क्या करें? “बड़ा भ्रम उत्पन्न करें।”

“डेली” के अन्य ऐसे मत अपनाए गए हैं जो भ्रम और अंधकार उत्पन्न करते हैं।

“और उन स्वर्णिम क्षणों का उपयोग करो, जिनका उत्साहपूर्वक प्रयोग लोगों के सामने उस महान संदेश को रखने के लिए किया जाना चाहिए। जिन विषयों पर हमने परिश्रम किया है, उन पर दी जाने वाली प्रस्तुतियाँ सब की सब एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में नहीं हो सकतीं, और उसका परिणाम यह होगा कि विश्वासियों और अविश्वासियों के मन भ्रमित हो जाएँगे। यही वह बात है जिसके घटित होने की शैतान ने योजना बनाई थी—ऐसी कोई भी बात जिसे मतभेद के रूप में बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जा सके।”

यदि प्रभु की इच्छा हुई, तो जब हम अपने बाइबल-अध्ययन से इन सिद्धान्तों को सिद्ध करना आरम्भ करेंगे, तब हम यहजेकेल 28 पर दृष्टि डालेंगे; क्योंकि यहजेकेल 28 वही स्थान है जहाँ “दैनिक” की मूल जड़ की पहचान की गई है। यहजेकेल 28 लूसिफ़र के आत्म-उत्थान के विषय में है, और वह इसे चिह्नित कर रही है; क्योंकि, जब वे यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि “दैनिक” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा का प्रतिनिधित्व करता है, तब वे न केवल “दैनिक” के सत्य दृष्टिकोण—जो आत्म-उत्थान का एक प्रतीक है—को अस्वीकार कर रहे थे, बल्कि वे उसी आत्म-उत्थान को अपने ही अनुभव में प्रकट भी कर रहे थे। वह इस बात पर बल देती है कि वे हमारी पंक्तियों में भ्रम ले आएँगे।

“अब, यहाँ एक महान कार्य है, जहाँ विचित्र आत्माएँ अपना प्रभाव दिखा सकती हैं। परन्तु प्रभु के पास एक कार्य है जो नाशमान प्राणों को बचाने के लिए किया जाना है; और जिन स्थानों को शैतान, भेष बदलकर, भर सकता है, हमारे दिलों में भ्रम लाता हुआ, वह उसे पूर्णता के साथ करेगा, और वे सब छोटी-छोटी भिन्नताएँ बढ़ाकर प्रमुख कर दी जाएँगी।”

और इसका क्या अर्थ है, “और मुझे दिखाया गया”? परमेश्वर ने उसे यह बात विशेष रूप से कही।

“और मुझे आरम्भ से ही यह दिखाया गया था कि प्रभु ने न तो एल्डर्स डैनिएल्स को और न ही प्रेस्कॉट को इस कार्य का भार दिया था। क्या शैतान की युक्तियाँ भीतर लाई जाएँ, क्या यह “डेली” ऐसी बड़ी बात बना दी जाए कि इस महत्वपूर्ण समय में मनो को भ्रमित करने और कार्य की उन्नति में बाधा डालने के लिए उसे प्रस्तुत किया जाए? जो कुछ भी हो, ऐसा नहीं होना चाहिए। इस विषय को प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए,”

सिस्टर व्हाइट “डेली” को समझती थीं, और वह यह भी समझती थीं कि यह शिक्षा देना कि “डेली” मसीह की पवित्रस्थान-सेवा है, ऐसी बात है जो स्वर्ग से निकाले गए स्वर्गदूतों की ओर से आई है और जो केवल भ्रम और अंधकार ही उत्पन्न करती है; और वह अग्रदूतों की उस स्थिति को भी जानती थीं कि “डेली” मूर्तिपूजकत्व का प्रतिनिधित्व करती थी, और जब “डेली” हटा दी गई, तब 1335-वर्षीय समय-भविष्यद्वाणी आरम्भ हुई। वह यह जानती थीं। वे इस भेद को जानती थीं, चाहे ये लोग कुछ भी कहना चाहें।

“किसी भी परिस्थिति में ऐसा नहीं होना चाहिए। इस विषय को प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि जो आत्मा भीतर लाई जाएगी वह निषेधकारी होगी, और लूसिफ़र प्रत्येक गतिविधि पर दृष्टि रखे हुए है। शैतानी माध्यम अपना कार्य आरम्भ कर देंगे, और हमारी पंक्तियों में भ्रम ले आया जाएगा। तुम्हें उस मतभेद की खोज करने का कोई आह्वान नहीं है जो परखने वाला प्रश्न नहीं है; परन्तु तुम्हारा मौन ही वाक्पटुता है। यह विषय मेरे सामने सब कुछ स्पष्ट रूप से रखा गया है। यदि शैतान इन विषयों पर हमारे अपने लोगों में से किसी एक को भी, जैसा कि उसने करने का प्रस्ताव रखा है, उलझा सके, तो शैतान का उद्देश्य विजयी हो जाएगा। अब कार्य को बिना विलम्ब हाथ में लिया जाना है, और किसी [मतभेद] की अभिव्यक्ति नहीं की जानी है।”

शैतान उन मनुष्यों को, जो हम में से निकल गए हैं, प्रेरित करेगा कि वे दुष्ट स्वर्गदूतों के साथ मिल जाएँ और तुच्छ प्रश्नों पर हमारे कार्य में विलंब उत्पन्न करें; और तब शत्रु की छावनी में कैसी प्रसन्नता होती! एक साथ निकट आओ, एक साथ निकट आओ। प्रत्येक भेदभाव को दफना दिया जाए। हमारा कार्य अब यह है कि हम अपनी सारी शारीरिक शक्ति और मस्तिष्क-तंत्रिकाओं की समस्त शक्ति को इन भेदों को मार्ग से हटाने में लगा दें, और सब परस्पर एकमत हों। यदि शैतान को अपनी महान अशुद्ध बुद्धि के द्वारा तनिक भी अधिकार प्राप्त करने दिया जाए, [तो वह आनन्दित होगा]।

“अब, जब मैंने देखा कि तुम कैसे कार्य कर रहे थे, तो मेरे मन ने समस्त परिस्थिति को और उसके परिणामों को समझ लिया—यदि तुम आगे बढ़ो और उन पक्षों को, जो हमें छोड़कर चले गए हैं, हमारी पंक्तियों में भ्रम उत्पन्न करने का तनिक भी अवसर दो। तुम्हारी बुद्धिहीनता ठीक वही होगी जो शैतान चाहता है। तुम्हारी ऊँचे स्वर की घोषणा पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन नहीं थी। मुझे तुम्हें यह कहने की शिक्षा दी गई कि परमेश्वर के द्वारा संचालित किए गए पुरुषों की रचनाओं में दोष ढूँढना परमेश्वर से प्रेरित नहीं है। और यदि यही वह बुद्धि है जो एल्डर Daniells लोगों को देना चाहेंगे, तो किसी भी रीति से उन्हें कोई आधिकारिक पद न दिया जाए, क्योंकि

वे कारण से परिणाम तक तर्क नहीं कर सकते। इस विषय पर तुम्हारा मौन ही तुम्हारी बुद्धिमानी है। अब, जो कुछ भी उन पुरुषों के प्रकाशनों में दोष ढूँढ़ने के समान है जो जीवित नहीं हैं, वह वह कार्य नहीं है जिसे परमेश्वर ने तुममें से किसी को करने के लिए दिया है। क्योंकि यदि ये पुरुष—एल्डर्स Daniells और Prescott—नगरो में कार्य करने के लिए दी गई आज्ञाओं का पालन करते, तो बहुत से, अत्यन्त बहुत से लोग सत्य के प्रति आश्चस्त होकर परिवर्तित हो गए होते—योग्य पुरुष, जो [अब] ऐसे पदों पर हैं जहाँ तक कभी पहुँचा नहीं जा सकेगा।”

“सम्पूर्ण संसार को एक महान परिवार के रूप में माना जाना चाहिए। और जब आपके पास ज्ञान का ऐसा स्रोत है, जिससे आप ग्रहण कर सकते हैं, तो आपने संसार को हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा दी गई साक्ष्यों के रहते हुए वर्षों तक नष्ट होने के लिए क्यों छोड़ दिया है? सच्चा धर्म हमें यह शिक्षा देता है कि हम प्रत्येक पुरुष और स्त्री को ऐसे व्यक्ति के रूप में देखें, जिसके प्रति हम भलाई कर सकते हैं।”

“यह अनेक वर्षों से मुद्रित रहा है: —‘एक संतुलित मन,’ एल्डर एंड्रूज़ के लिए एक साक्ष्य। मन को इस प्रकार विकसित किया जा सकता है कि वह यह जानने की सामर्थ्य बन जाए कि कब बोलना है और कौन-से भार उठाने और वहन करने हैं, क्योंकि मसीह आपका शिक्षक है। और जब मैंने आपको अपनी बुद्धि को ऊँचा उठाते और मतभेद उत्पन्न करने वाली चाल चलाते देखा, तब मैं आपके लिए अत्यन्त भयभीत हुई। प्रभु ऐसे बुद्धिमान पुरुषों को बुलाता है जो उस समय मौन रह सकें जब ऐसा करना उनके लिए बुद्धिमानी हो। यदि आप एक पूर्ण मनुष्य होना चाहते हैं, तो आपको यीशु मसीह के द्वारा पवित्रीकरण की आवश्यकता है। अब एक कार्य अभी-अभी आरम्भ हुआ है, और प्रत्येक सेवक में, प्रत्येक सम्मेलन के अध्यक्ष में, बुद्धि दिखाई दे। परन्तु यहाँ एक ऐसा कार्य था जिसे आपको वर्षों पहले ग्रहण करना चाहिए था, जहाँ इस विशेष कार्य के लिए आपका स्वर उठाना आवश्यक था। मसीह ने अपने सब लोगों को विशेष निर्देश दिए कि उन्हें क्या करना है और कौन-सी बातें नहीं करनी हैं। और हमारे पास प्रभु की धार्मिकता को कार्यरूप में प्रकट करने के लिए थोड़ा ही समय शेष है। आप प्रभु के मार्ग को समझ सकते हैं। मैंने आपका यह उद्देश्य देखा कि अध्यक्ष पद पर नियुक्त किए जाने के बाद आप बातों को अपनी ही युक्ति के अनुसार चलाना चाहते थे। आपने सोचा था कि आप आश्चर्यजनक कार्य करेंगे, जबकि वह ऐसा कार्य होता जिसे करने के लिए परमेश्वर ने आपके हाथों में नहीं सौंपा था। अब, यदि प्रभु ने आपको सेवा के लिए स्वीकार किया है, तो आपका कार्य दबाना नहीं, वरन् जहाँ तक सम्भव हो हर आवश्यकता में विमोचन देना है। परन्तु आपने बहुत आरम्भ में ही यह प्रमाण दे दिया कि आपके द्वारा न तो बुद्धि और न ही पवित्र किया हुआ न्याय प्रकट हुआ है। आपने ऐसी बातों को प्रकट कर दिया जिन्हें स्वीकार नहीं किया जाता, जब तक कि प्रभु स्वयं प्रकाश न दे।”

मुझे यह निर्देश दिया गया है कि ऐसे उतावले कदम नहीं उठाए जाने चाहिए थे, जैसे कि तुम्हें सम्मेलन का अध्यक्ष एक और वर्ष के लिए चुन लेना। परन्तु प्रभु ऐसी और किसी भी उतावली कार्यवाही को निषिद्ध करता है, जब तक कि यह विषय प्रार्थना में प्रभु के सम्मुख न लाया जाए; और चूँकि तुम्हारे पास यह संदेश पहुँच चुका था कि अध्यक्ष पर ठहरा हुआ प्रभु का कार्य अत्यन्त गंभीर उत्तरदायित्व है, इसलिए तुम्हें ‘डेली’ के विषय में वैसे भड़क उठने का कोई नैतिक अधिकार नहीं था जैसा तुम हुए, और यह मान लेना भी उचित नहीं था कि तुम्हारा प्रभाव उस प्रश्न का निर्णय कर देगा। वहाँ एल्डर हैस्केल थे, जिन्होंने भारी उत्तरदायित्व उठाए हैं, और वहाँ एल्डर इरविन हैं, तथा कई अन्य पुरुष हैं जिनका मैं उल्लेख कर सकता हूँ, जिन पर भारी उत्तरदायित्व है।

“आयु में बड़े पुरुषों के प्रति आपका सम्मान कहाँ था? सब उत्तरदायी पुरुषों को इस विषय पर विचार करने के लिए साथ लिए बिना आप कौन-सा अधिकार प्रयोग कर सकते थे? परन्तु अब हम इस विषय की जाँच करें। अब हमें फिर से विचार करना होगा कि जो कार्य उपेक्षित रहा है, उसके होते हुए, क्या यह प्रभु का न्याय है कि आप अपने उत्साह का प्रदर्शन करते हुए उस कार्य को एक और वर्ष तक आगे बढ़ाएँ। यदि आप उस सहायता के साथ, जो आपके साथ एक हो जाएगी, उस कार्य को एक और वर्ष तक आगे बढ़ाएँ, तो आप में और एल्डर प्रैस्कॉट में परिवर्तन होना चाहिए। और अपने हृदयों को परमेश्वर के सामने दीन कीजिए। प्रभु को आप में एक भिन्न अनुभव का प्रकट होना देखना होगा, क्योंकि यदि कभी किसी मनुष्यों को इस वर्तमान [समय] में फिर से परिवर्तित होने की आवश्यकता थी, तो वह एल्डर डैनियल्स और एल्डर प्रैस्कॉट [को] थी।”

“सात ऐसे पुरुष चुने जाने चाहिए जो बुद्धिमान हों और परमेश्वर के अनुग्रह की कार्यवाही के द्वारा पुनः-परिवर्तन का प्रमाण दें। क्योंकि जो पुरुष इतने अन्धे हो गए हों कि वे कारण से परिणाम तक तर्क न कर सकें, यहाँ तक कि वे उन पुरुषों की उपेक्षा करें जिन्होंने कार्य की जिम्मेदारियाँ उठाई हैं, और इन कॉन्फ्रेन्सों के अध्यक्षों की भी; [और] जो पुरुष दो वर्षों से अधिक समय तक इस कार्य को आगे बढ़ाते रहे हों उन्हें तुच्छ समझा जाए, और ऐसा उतावला परिणाम घटित हो कि पुरुष उस उसी कार्य की उपेक्षा करने लगे जो वर्षों से उनके सामने रखा गया था—नगरों में कार्य करना—और वृद्ध पुरुषों से परामर्श लेने के लिए कोई, या बहुत ही अल्प, ध्यान दिया जाए, परन्तु वे लोगों के सामने वही बातें घोषित करें जिन्हें वे देना चुनते हैं—यह अपने आप में इस बात की गवाही देता है कि ऐसे महान और अद्भुत कार्य के लिए जिन पुरुषों को सौंपा जाना है, वे सुरक्षित नहीं हैं।”

“मसीह मृत नहीं है। वह कभी यह सहन नहीं करेगा कि उसका कार्य इस विचित्र रीति से चलाया जाए। पुस्तकों को वैसा ही रहने दो। यदि किसी परिवर्तन की नितांत आवश्यकता हो, तो परमेश्वर उस परिवर्तन में भी संगति को सुसंगत रखेगा; परन्तु जब कोई संदेश मनुष्यों को उससे जुड़ी महान जिम्मेदारियों सहित सौंपा गया हो, तो [परमेश्वर] ऐसी विश्वासयोग्यता की अपेक्षा करता है जो प्रेम के द्वारा कार्य करे और आत्मा को शुद्ध करे। एल्डर डेनियल्स और प्रेस्कॉट—दोनों को पुनःपरिवर्तन की आवश्यकता है। एक विचित्र कार्य भीतर आ गया है, और वह उस कार्य के साथ संगति में नहीं है जिसे करने के लिए मसीह हमारे संसार में आया था; और जो कोई सचमुच परिवर्तित है, वह मसीह के ही कार्य करेगा।”

हम सबको उस कार्य को पूरा करना है जो पिता की महिमा करेगा। हम संकट की घड़ी पर आ पहुँचे हैं—या तो इस तैयारी के समय में ही यीशु मसीह के चरित्र के अनुरूप बनें, या इसका प्रयत्न ही न करें। एल्डर डेनियल्स, आपको यह स्वतंत्रता अनुभव नहीं करनी है कि जैसा आपने समान परिस्थितियों में किया है, वैसे ही आपका स्वर ऊँचा सुनाई दे। और यह समझ लीजिए कि किसी कॉन्फ्रेन्स का अध्यक्ष शासक नहीं होता। वह उन बुद्धिमान पुरुषों के साथ संबंध में कार्य करता है जो अध्यक्षों के पद पर हैं और जिन्हें परमेश्वर ने स्वीकार किया है। उसे उन लेखनों में हस्तक्षेप करने की स्वतंत्रता नहीं है जो छपी हुई पुस्तकों में उन लेखनियों से निकले हैं जिन्हें परमेश्वर ने स्वीकार किया है। जब तक वे शासक, प्रभुत्व जताने वाली शक्ति का कम प्रदर्शन न करें, तब तक उन्हें और अधिक प्रभुत्व नहीं चलाना है। संकट की घड़ी आ पहुँची है, क्योंकि परमेश्वर का अनादर होगा।

“अप्रयुक्त नगरों पर प्रभु कैसी दृष्टि करते हैं? मसीह स्वर्ग में है। अब उसकी स्वीकृति यह होनी है,—कोई राजकीय शासन नहीं है। और अब इस संसार का संकट उपस्थित है। अब मैं उद्धार करने या नाश करने की शक्ति हूँ। अब वह समय है जब सबका भाग्य मेरे हाथों में है। मैंने संसार को बचाने के लिए अपना जीवन दे दिया है। और ‘मैं, यदि ऊँचे पर उठाया जाऊँ,’ जो उद्धारकारी अनुग्रह मैं प्रदान करूँगा, वह यह सिद्ध करेगा कि वे सब, जो दैवी सदृश्यता के अनुसार ढाले जाएँगे और मेरे साथ एक होंगे, मेरे उद्धारकारी अनुग्रह की शक्ति के साथ वैसे ही कार्य करेंगे जैसे मैं कार्य करता हूँ।’ जो कोई चाहे, वह अपने भाइयों के साथ मिलकर उस कार्य को करने के लिए हाथ बढ़ाए जो उन्हें करना दिया गया है, जब वे प्रभु द्वारा दी गई सम्मति के अधीन उत्तरदायित्वपूर्ण स्थानों में हों, और अत्यन्त earnestness से उसके साथ पूर्ण सामंजस्य में कार्य करने का यत्न करें, जिसने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि उसने संसार के उद्धार के लिए अपना जीवन पूर्ण बलिदान के रूप में दे दिया। मैं अपने सेवकों से कहती हूँ कि जब वे हमारे नगरों में कार्य में प्रविष्ट हों, तब वचन की सेवकाई के साथ एक शान्त, पवित्र गंभीरता संलग्न रहे। यदि हम . . . [इस पृष्ठ का निचला तिहाई भाग रिक्त छोड़ा गया है।]”

मैं अपनी डायरी से नकल करती हूँ। सत्य जैसा वह यीशु में है—उसी की चर्चा करो, उसी के लिए प्रार्थना करो, और उसकी प्रत्येक बात को उसकी सरलता में विश्वास करो। यदि उन मनुष्यों के सामने भूलें प्रस्तुत की जाएँ, जो विश्वास से हट गए हैं और बहकानेवाली आत्माओं पर ध्यान देने लगे हैं, वे मनुष्य जो अभी कुछ समय पहले तक विश्वास में हमारे साथ थे, तो तुम क्या प्राप्त करोगे? क्या तुम शैतान का पक्ष लोगे? अपनी दृष्टि उन खेतों पर लगाओ जिनमें अभी कार्य नहीं हुआ है। हमारे सामने विश्वव्यापी कार्य है। मुझे जॉन केलॉग के विषय में प्रतिरूप दिखाए गए।

एक अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व उन भ्रामक तर्कों के विचारों का प्रतिनिधित्व कर रहा था जिन्हें वह प्रस्तुत कर रहा था—ऐसी भावनाएँ, जो बाइबल के वास्तविक सत्य से भिन्न थीं। और जो लोग किसी नई बात के लिए भूखे और प्यासे थे, वे [इतने भ्रामक] विचारों को आगे बढ़ा रहे थे कि एल्डर प्रेस्कॉट बड़े संकट में थे। एल्डर डैनिएल्स इस [भ्रम] के मोहजाल में फँसने के बड़े खतरे में थे कि यदि इन भावनाओं को सर्वत्र कहा जाए, तो वह मानो एक नया संसार होगा।

“हाँ, ऐसा होता; परन्तु जब उनके मन इस प्रकार उसमें तल्लीन थे, तब मुझे दिखाया गया कि भाई Daniells और भाई Prescott अपने अनुभव में आध्यात्मिक[वादी] रूप वाले भावों को बुन रहे थे और हमारे लोगों को ऐसे मनोहर भावों की ओर आकर्षित कर रहे थे जो, यदि सम्भव हो, तो स्वयं चुने हुए लोगों तक को धोखा दे दें।”

अति चुने हुए लोग धोखा नहीं खाएँगे, परन्तु ऐसे लोग होंगे जो अति चुने हुए लोगों के साथ खड़े हैं और वे धोखा खा जाएँगे। अति चुने हुए लोग बुद्धिमान कुँवारियाँ हैं। मूर्ख कुँवारियाँ धोखा खा जाएँगी, ठीक है न?

और इस समयावधि में बुद्धिमान कुँवारियों के रूप में, जब प्रलोभन ऐसा उपस्थित है कि वह चुने हुए लोगों को भी भरमा दे, जैसे बुद्धिमान कुँवारियाँ पवित्र आत्मा की उंडेली जाने वाली परिपूर्णता को प्राप्त कर रही हैं, वैसे ही मूर्ख कुँवारियाँ क्या प्राप्त कर रही हैं? 2 थिस्सलुनीकियों का प्रबल भ्रांति-प्रभाव। हम इसका भी विचार दैनिक के संबंध में करेंगे।

—“अपनी अनुभूति में आध्यात्मिक[वादी] स्वरूप की भावनाएँ बुन रहे थे और हमारे लोगों को ऐसी मनोहर भावनाओं की ओर आकर्षित कर रहे थे, जो यदि संभव हो, तो चुने हुए लोगों को भी धोखा दे दें।”

आत्मावाद का सबसे मूलभूत सार क्या है?

जब राजा शाऊल की कथा की बात आती है, तो शमूएल ने क्या कहा? “आज्ञा का उल्लंघन टोने के समान है।” विद्रोह टोना है।

शाऊल का अंत कहाँ होता है?

श्रोताओं की ओर से: एन्दोर की जादूगरनी के साथ।

एन्दोर की जादूगरनी के साथ।

ऐसा क्या था जो राजा शाऊल ने किया कि घटनाओं की यह श्रृंखला उत्पन्न हुई, जो उसे एन्दोर की ओझाइन के पास ले गई? उसने अपने वचन को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखा। उसे बताया गया था कि क्या करना है, परन्तु वह आगे बढ़ा और उसने वही किया जो वह स्वयं करना चाहता था।

आत्मवाद का मूल सार यही है कि परमेश्वर के वचन से ऊपर अपने वचन को रखा जाए। सब कुछ वहीं से आरंभ होता है। वही टोना-टोटका है।

टोना-टोटका यह पहचानना है कि शैतान किस प्रकार तुम्हें अपने प्रभाव के अधीन ले आता है। वह किस प्रकार तुम्हें मोहित करता है—यह एक जादुई पद है, जो जादुई छल से संबंधित है।

जब आप मोहित किए जाते हैं, तो सबसे पहले कौन मोहित होता है? टोना करने वाला। यह सब तब आरम्भ होता है जब मैं अपने वचन को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखता हूँ। यही टोना-टोटका है, यही विद्रोह है, और वही मैं हूँ जो मोहित हो गया है। और यही दानियेल्स और प्रेस्कॉट के साथ हुआ।

और जब यह हो रहा था, तब डैनियेल्स और प्रेस्कॉट कौन-सी भावनाएँ भीतर लाने का प्रयास कर रहे थे? “निरन्तर” के विषय में एक गलत दृष्टिकोण।

और “डेली” के विषय में सत्य दृष्टिकोण क्या है? यह कि वह पगानवाद है, और पगानवाद आत्म-उत्कर्ष का धर्म है। यह वह धर्म है जिसका आरम्भ स्वर्ग के दरबारों में हुआ, जब शैतान ने, जब शैतान ने, अपने वचन को परमेश्वर के वचन से ऊपर ठहराया और मनुष्यजाति के इतिहास में अधर्म के भेद को प्रविष्ट कराया।

अधर्म का भेद हमें मोहित करने में शैतान का कार्य है। यह हमें इस स्थिति में ले आने में शैतान का कार्य है कि हम परमेश्वर के वचन से ऊपर अपने वचन या उसके वचन को रखें।

क्या आप मेरी बात का आशय समझ रहे हैं?

“इनिक्विटी” को देखिए। स्ट्रॉन्स कॉनकॉर्ड्स में वह “इनिक्विटी” की परिभाषा देगा। और जब आप उसे उसके मूल शब्द तक ले जाते हैं, तो “इनिक्विटी” का मूल शब्द क्या है? अल्फा, अल्फा। वही अल्फा अपोस्टेसी है।

डैनियल्स और प्रेस्कॉट इस मूर्खतापूर्ण मत को कब आगे बढ़ा रहे थे? अल्फा धर्मत्याग के कालखंड में।

अतः यहाँ सिस्टर व्हाइट जो “चुने हुएों तक को भरमा देने” के विषय में और यहजेकेल 28 को पढ़ने के विषय में कह रही हैं, उसे न चूकें। वह जानती थीं कि क्या चल रहा था। वह जानती थीं कि यह “डेली” संबंधी विषय न केवल सिद्धान्तगत रूप से गलत है, बल्कि यह उन लोगों से, जो “डेली” के विषय में गलत दृष्टिकोण का प्रचार करने जा रहे हैं, यह अपेक्षा करता है कि वे अपने वचन को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखें, और उन्हें ऐसी स्थिति में ले आता है जहाँ वे मोहित हो जाते हैं; और इसलिए वे शैतान के हाथ में ऐसा साधन बन जाते हैं कि अपनी विद्रोही वृत्ति के द्वारा दूसरों को भी मोहित करें।

मुझे अपनी लेखनी से [इस तथ्य को] अंकित करना है कि ये भाई अपने भ्रमकारी विचारों में ऐसी त्रुटियाँ देखेंगे जो सत्य को अनिश्चितता में डाल देंगी; और [फिर भी] वे ऐसे प्रकट होंगे मानो [उनके पास] महान आत्मिक विवेक हो। अब मुझे उन्हें [यह] बताना है [कि] जब मुझे यह विषय दिखाया गया,

लोग कहते हैं, “ओह, एलेन व्हाइट, ‘डेली’ के विषय में उनका कोई मत नहीं है।”

“जब मुझे यह विषय दिखाया गया, उस समय एल्डर डैनियल्स ‘डेली’ के विषय में अपने विचारों का समर्थन करते हुए अपनी आवाज़ तुरही के समान बुलंद कर रहे थे; उसके बाद के परिणाम मुझे प्रस्तुत किए गए। हमारे लोग भ्रमित होते जा रहे थे। मैंने उसका परिणाम देखा, और तब मुझे ये चेतावनियाँ दी गईं कि यदि एल्डर डैनियल्स, परिणाम की परवाह किए बिना, इस प्रकार प्रभावित हों और अपने आप को यह विश्वास करने दें कि वे परमेश्वर की प्रेरणा के अधीन हैं,—

यह अध्यात्मवाद है। उसने अपने वचन को परमेश्वर के वचन से ऊपर रख दिया है। वह यह विश्वास कर रहा है कि वह परमेश्वर द्वारा प्रेरित हो रहा है।

“कि यदि एल्डर डैनियल्स परिणाम की परवाह किए बिना इस प्रकार प्रभावित हो जाएँ और अपने आपको यह विश्वास करने दें कि वे परमेश्वर की प्रेरणा के अधीन हैं, तो हमारे दल के बीच सर्वत्र संशयवाद बोया जाएगा, और हम वहाँ पहुँच जाएँगे जहाँ शैतान अपने संदेश पहुँचाता है। दृढ़ अविश्वास और संशय मानव मनो में बोए जाएँगे, और बुराई की विचित्र फसलें सत्य का स्थान ले लेंगी। Ms 67, 1910, 1-8. Manuscript Release, volume 20, 17-22.”

आज समस्त ऐडवेंटवाद में दुष्टता की विचित्र फसलें उग रही हैं।

एलेन व्हाइट 2520 के संबंध में पायनियरों की समझ का अपना समर्थन प्रकट करती हैं।

एलेन व्हाइट ने इस अग्रदूत-समझ का समर्थन किया है कि दानिय्येल की पुस्तक में “नित्य” से अभिप्राय मूर्तिपूजा है।